Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

अल्लाह तआला का आदेश

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ

(सूरः हामीमसज्दा:9)

अनुवाद : बेशक वे लोग जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करते रहे उनके लिए अनवरत पुरस्कार है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْد

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 40
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

09 रबीउल् सानी, 1446-47 हिज्री कमरी, 02 ईखा 1404 हिज्री शम्सी, 02 अक्तूबर 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

जितना अधिक कोई धनी है उतना ही अधिक वह तृष्णाग्रस्त है, उस व्यक्ति को छोड़कर जो धन इस प्रकार खर्च करे।

(2388) हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ था जब आपने उहुद पहाड़ को देखा तो आपने फ़रमाया: यह (पहाड़) मेरे लिए सोना बना दिया जाए तो भी मुझे पसंद नहीं कि उसमें से एक दीनार मेरे पास तीन दिन से अधिक रहे, सिवाय उस दीनार के जो कर्ज चुकाने के लिए रखूं। फिर आपने फ़रमाया: जितना अधिक कोई धनी है उतना ही अधिक वह तृष्णाग्रस्त है, सिवाय उस व्यक्ति के जो धन इस प्रकार खर्च करे।

إِنَّ الْأَكْثَرِينَ هُمُ الْأَقَلُّونَ: हज़रत सैय्यद ज़ैनुल आबिदीन वली उल्लाह शाह साहिब फ़रमाते हैं: यह वाक्य जो جوامع الكلم में से है और इसका मतलब यह है कि धनवानी रुपया जमा करने में नहीं है बल्कि अधिकतर धनी लोग उत्तम चरित्र से वंचित होने के कारण तृष्णाग्रस्त हैं। धनवानी धन इकट्ठा करने में नहीं बल्कि दाएं-बाएं खर्च करने में है अर्थात धार्मिक और सांसारिक ज़रूरतों में खर्च करने से धन का वास्तविक उद्देश्य पूरा होता है। वह व्यक्ति जिसने पैसा जमा रखा और अधिकारों को अदा करने में खर्च नहीं किया, वही सबसे ज्यादा तृष्णाग्रस्त है, लेकिन जिस व्यक्ति ने अपने धन से अधिकार अदा किए वही वास्तव में संतुष्ट है क्योंकि उसने धन का असली मकसद हासिल कर लिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का धन के बारे में यह नज़रिया अत्यंत बुद्धिमत्तापूर्ण है।

(सहीह बुखारी, भाग 4, किताब अल-इस्तिक़राज़, मतबूआ 2008 कादियान)

क्षमा-याचना बहुत करो, इससे पाप भी माफ़ हो जाते हैं, अल्लाह तआला संतान भी दे देता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

क्षमा-याचना और यकीन

एक व्यक्ति ने अर्ज की कि हुज़ूर मेरे लिए दुआ कीजिए कि मेरी संतान हो जाए। आपने फ़रमाया कि:

"क्षमा-याचना बहुत करो। इससे पाप भी माफ़ हो जाते हैं, अल्लाह तआला संतान भी दे देता है। याद रखो यकीन बड़ी चीज है। जो व्यक्ति यकीन में पूरा होता है, अल्लाह तआला खुद उसकी सहायता करता है।"

एक परीक्षा वाले आदमी के बारे में दुआ के लिए अर्ज की गई, फ़zzरमाया "दुआ तो की जाती है मगर कभी-कभी अल्लाह तआला ने इंसान के लिए कोई और नेमत रखी होती है और दुआ जाहिरी लफ्जों में पूरी होती हुई नजर नहीं आती, इसमें एक इम्तिहान होता है। खासतौर पर उन लोगों के लिए जो जाहिरन नेक होते हैं क्योंकि वह समझते हैं कि हम तो नेक थे, हम पर यह इम्तिहान क्यों आया।"

अल्लाह तआला पर भरोसा

फ़रमाया: "हमें तो अल्लाह पर इतना भरोसा है कि हम तो अपने लिए दुआ भी नहीं करते, क्योंकि वह हमारे हाल को अच्छी तरह जानता है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब काफिरों ने आग में डाला तो फरिश्तों ने आकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पूछा कि आपको कोई हाजत है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: بَلٰى۔ وَلٰكِنْ اِلَيْكُمْ لَا۔ हां हाजत तो है, मगर तुम्हारे आगे पेश करने की कोई हाजत नहीं। फरिश्तों ने कहा कि अच्छा अल्लाह तआला के आगे ही दुआ करो। तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: عِلْمُهٗ مِنْ حَالِيْ حَسْبِيْ مِنْ سُوَالِيْ। उसका मेरे हाल से इल्म ही मेरे सवाल के लिए काफी है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 89,91, एडिशन 2018, कादियान)

आध्यात्मिकता का सातवां दर्जा मानवीय पूर्णता का वह अंतिम बिंदु है जहां पहुंच कर खुदा के गुण उसके दिल के आईने में प्रतिबिंबित होने लगते हैं और वह उसकी महिमा और सौंदर्य का प्रतिबिंब बन जाता है, उससे दुश्मनी रखने वाले अल्लाह तआला से दुश्मनी रखने वाले ठहराए जाते हैं और उससे मुहब्बत रखने वाले अल्लाह तआला की बरकतों और उसके इनामों के पात्र बनते हैं।

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अल्-मोमिनून आयत 18 وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ की तफ्सीर में फ़रमाते हैं:

फिर इंसान इससे भी आगे तरक्की करता है और छठा दर्जा उसे हासिल होता है कि उसमें ऐसा तकवा पैदा हो जाता है कि वह अपने आप को पूरी तरह अल्लाह तआला के हवाले कर देता है जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है: بَلٰى مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ص وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○ अर्थात जो लोग अपने आप को पूरी तरह अल्लाह तआला के सुपुर्द कर दें और नेक अमल बजा लाएं, उनके लिए उनके रब के हुजूर बहुत बड़ा अज्र निश्चित है और वह हर किस्म के खौफ और गम से महफूज रहेंगे। मलकूती मकाम पर तो वह समझता था कि मैं भी कुछ कर सकता हूं, मुझे हुक्म दो तो मैं दौड़ कर उसकी तामील करूंगा। मगर इस मकाम पर पहुंच कर इंसान की यह हालत हो जाती है कि वह कहता है कि मैं तो कुछ भी नहीं हूं, जिस तरह आपकी मर्जी हो उसी तरह मुझे चला लीजिए। इस मकाम पर पहुंच कर उसके सारे काम अल्लाह तआला के काम हो जाते हैं क्योंकि वह अपने आप को अल्लाह तआला के हाथ में एक बेजान हथियार की तरह दे देता है। ऐसे लोगों की निस्बत ही रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि कुछ लोग तरक्की करते करते ऐसे मकाम पर पहुंच जाते हैं कि अल्लाह उनकी आंखें और कान और हाथ-पैर बन जाता है। अर्थात उनकी सारी हरकतें और सकूनात उसकी मर्जी के मुताबिक होती हैं और वह हर इम्तिहान और ठोकर से महफूज हो जाते हैं।

सातवां मकाम जिस पर इंसान तरक्की करके पहुंचता है वह वही है जिसका ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ में वर्णन किया गया है। अर्थात फिर उसे एक और सृष्टि में बदल दिया जाता है और इस पर ऐसा आसमानी रंग चढ़ जाता है कि पहले तो वह अल्लाह तआला के बुलाए बोलता था मगर अब उसको वह मकाम अता किया जाता है कि जो कुछ वह कहता है अल्लाह तआला भी उसी के मुताबिक अपने अहकाम जारी कर देता है। अर्थात पहले तो अल्लाह उसके हाथ-पैर बनाता था मगर फिर वह तरक्की करते करते ऐसे मकाम पर पहुंच जाता है कि उसके अपने हाथ-पैर अल्लाह तआला के हाथ-पैर और उसकी जुबान अल्लाह तआला की जुबान बन जाती है और वह مَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى का मिस्दाक हो जाता है। यह मानवीय पूर्णता

शेष पृष्ठ 08 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जितनी भी लड़ाइयाँ लड़ीं, उनमें सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि युद्ध के मैदान में हालात चाहे जैसे भी रहे हों, हर युद्ध में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दृढ़ता और साहस की कोई मिसाल नहीं मिलती। जिस समय बड़े-बड़े बहादुरों के भी पैर उखड़ जाते हैं, उस समय भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक चट्टान की तरह वहाँ मौजूद नज़र आते रहे।

हुनैन के मुकाबले में पहले तो मुसलमानों को जीत हुई। फिर दुश्मन के ज़बरदस्त हमले से भगदड़ मच गई और अस्थायी हार हुई, लेकिन आखिरकार मुसलमानों को ज़बरदस्त जीत नसीब हुई।

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा, आप सफेद खच्चर पर सवार थे और अबू सुफयान बिन हारिस उसकी लगाम पकड़े हुए थे और आप यह कह रहे थे: "अन्ननबिय्यु ला कज़िब, अन्नब्नु अब्दिल मुत्तलिब" अर्थात कि मैं नबी हूँ, यह कोई झूठ नहीं है और मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

अल्लाह की कसम! जब युद्ध तेज़ हो जाता था तो हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरण में आ जाया करते थे। और सबसे ज़्यादा बहादुर वही समझा जाता था जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के करीब रहता था।

ग़ज़वा-ए-हुनैन के परिप्रेक्ष्य में सीरत-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ईमान अफ़रोज़ तज़किरा। साथ ही जर्मनी के सालाना जलसे के शामिलीन को नसीहतें और दुनिया के हालात के मद्देनज़र दुआओं की तहरीक।

आज से जर्मनी का सालाना जलसा भी शुरू हो गया है... इन दिनों में अपनी इल्मी, अमली और रूहानी तरक्की में लगातार बढ़ते चले जाने का अहद करें और इसके लिए कोशिश करें। इन दिनों में खास तौर पर ज़िक्र-ए-इलाही और दुआओं में वक्त गुज़ारें। पाकिस्तान में आए दिन कोई न कोई तकलीफ़देह वाक़िया हो जाता है। अल्लाह तआला जल्द ही इन मुख़ालिफ़ीन की पकड़ के सामान फ़रमाए।

फिलिस्तीन के मज़लूमों और दुनिया के आम हालात के लिए दुआ की तहरीक।

आज यह हम अहमदियों का काम है कि सभी ज़ुल्मों के ख़िलाफ़ जहाँ-जहाँ बस चलता है आवाज़ पहुँचाएँ और खास तौर पर दुआएँ करें और दिल के दर्द से दुआएँ करें।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 अगस्त 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-हुनैन के तअल्लुक में आज कुछ और तफ्सील वर्णन करूँगा।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का से रवाना होते वक्त हज़रत अत्ताब बिन असीद रज़ियल्लाहु अन्हु को मक्का का अमीर बनाया। यह मक्का के पहले अमीर थे जो निश्चित किए गए। उस वक्त हज़रत अत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र तकरीबन बीस साल थी। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को अहल-ए-मक्का को दीन की तालीम सिखाने की ज़िम्मेदारी सौंपी।

हज़रत अत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का तआरुफ यह है कि उनके वालिद का नाम असीद बिन अबुल ऐस बिन उमय्या था। यह दोनों बाप-बेटा कुरैश खानदान के सरकर्दा फर्द थे और इस्लाम के सख्त मुख़ालिफ थे। उनकी वालिदा का नाम ज़ैनब था। अत्ताब के वालिद फतह-ए-मक्का से पहले वफात पा चुके थे और अत्ताब की इस्लाम से नफ़रत और दूरी का यह आलम था कि फतह-ए-मक्का के रोज़ जब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने खाना-ए-काबा में अज़ान दी तो अत्ताब ने अपने साथियों से कहा कि अल्लाह का शुक्र है कि मेरा बाप यह अज़ान सुनने से पहले ही दुनिया से चला गया। बहरहाल, अत्ताब ने इसके बाद फतह-ए-मक्का के दिन इस्लाम भी कबूल कर लिया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार ख्वाब में उनके वालिद असीद बिन अबुल ऐस को इस्लाम की हालत में मक्का पर आमिल के तौर पर देखा था। वह तो कुफ्र की हालत में मर गया और अब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख्वाब की ताबीर उसके बेटे हज़रत अत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की सूरत में ज़ाहिर हुई।

एक रिवायत के मुताबिक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख्वाब में देखा कि अत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत के दरवाज़े पर आए और बड़े जोर से दरवाज़े को खटखटाया। आखिर दरवाजा खोला गया और वह उसमें दाखिल हो गए। एक और रिवायत के मुताबिक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अत्ताब के वालिद असीद को, जो कि काफिर थे और कुफ्र की हालत में फौत हुए, जन्नत में देखा और ख्याल किया कि असीद कैसे जन्नत में दाखिल हो गया। फतह-ए-मक्का के दिन अत्ताब बिन असीद सामने आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने उसी को जन्नत में देखा था। उसको मेरे सामने लाओ। उन्हें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने लाया गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें मक्का का अमीर निश्चित फ़रमाया और फ़रमाया: हे अत्ताब! तुम्हें मालूम है कि मैंने किन लोगों पर तुम्हें अमीर बनाया है। मैंने तुम्हें अहलुल्लाह अर्थात अल्लाह के घर वालों पर अमीर बनाया है। इसलिए उनके साथ नेक मुआमला करना। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें यह बात तीन बार फरमाई।

यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वफात तक मक्का पर आमिल रहे। एक रिवायत में है कि यह अहद-ए-हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु में भी मक्का के आमिल थे और उनकी वफात उसी रोज़ हुई जिस दिन हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की वफात हुई थी, और एक रिवायत के मुताबिक यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-खिलाफत तक ज़िंदा रहे।

मक्का से हुनैन की तरफ रवानगी के बारे में लिखा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़वा-ए-हुनैन के लिए छः शव्वाल को हफ्ते के दिन रवाना हुए और दस शव्वाल को मकाम-ए-हुनैन पर पहुँचे। इब्ने कसीर के नज़दीक पाँच शव्वाल को रवानगी हुई थी। जिस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हुनैन की तरफ चले तो आपकी दो पवित्र पत्नियाँ अर्थात हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा आपके हमराह थीं। बाज़ रिवायतों के मुताबिक हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा और मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा साथ थीं, लेकिन मुतबर रिवायतों के मुताबिक हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा आपके हमराह थीं।

(शरह-ए-ज़रकानी भाग-ए-सौम, पृष्ठ 498-499, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (अस-सीरतुल हल्बिया भाग-3, पृष्ठ 139, 165, 149-150, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (सीरतुन नबविया लि-इब्ने हिशाम, पृष्ठ 745, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (अल-लुलुल मक्नून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग-9, पृष्ठ 251, दारुस्सलाम) (असदुल ग़ाबा भाग-3, पृष्ठ 549, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (अत-तबकातुल कुबरा लि-इब्ने सअद, जुज़-6, पृष्ठ 5, दारुल कुतुब इल्मिया,

बेरूत) (अल-बिदाया वन निहाया भाग-7, पृष्ठ 5, दार-ए-हिज्र) (तारीखुल खमीस, जुज़-ए-सानी, पृष्ठ 528, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

मुसलमानों की संख्या के बारे में लिखा है कि ग़ज़वा-ए-हुनैन में इस्लामी लश्कर की संख्या अगरचे मुख़ालिफ़ीन की निस्बत कम थी, लेकिन अभी तक के सारे साबिक़ा ग़ज़वात की निस्बत ज़्यादा संख्या थी। न सिर्फ़ अद्दी लिहाज़ से बल्कि हथियारों के लिहाज़ से भी।

आइम्मा-ए-मग़ाज़ी ने लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बारह हज़ार मुसलमानों के साथ आज़िम-ए-सफ़र हुए। दस हज़ार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम जो मदीना से फतह-ए-मक्का के लिए आए, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह आए थे। अहल-ए-मक्का में से दो हज़ार लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह रवाना हुए। बाज़ ने चौदह हज़ार भी बयान किया है, लेकिन ज़्यादातर बारह हज़ार की संख्या की रिवायत ही मिलती है। दो हज़ार मक्का के नौमुस्लिम शामिल हुए थे। जो चौदह हज़ार बताते हैं, उन्होंने मदीना से आने वालों की संख्या दस के बजाय बारह हज़ार बताई है, लेकिन मक्का से शामिल होने वाले दो हज़ार ही बताए हैं।

(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, भाग-9, पृष्ठ 233 से 235, बज़्म-ए-इकबाल, लाहौर) (अल-बिदाया वन निहाया भाग-7, पृष्ठ 11, दार-ए-हिज्र) (सीरत-ए-इब्ने हिशाम, पृष्ठ 763, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (शरह-ए-ज़रकानी भाग-ए-सौम, पृष्ठ 498, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

हुनैन के रास्ते में "ज़ात-ए-अनवात" नाम का एक बेरी का बड़ा दरख्त था, जिसका मुश्रिकीन बहुत एहतराम करते थे और फतह के शगुन के तौर पर अपने हथियार उस पर लटकाते थे और यहाँ एतेकाफ भी करते थे और बहुत अकीदत व एहतराम का इज़हार करते थे। जब काफिला इस दरख्त के करीब से गुज़रा तो मक्का के कुछ नौमुस्लिमों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरख्वास्त की कि हमारे लिए भी इसी तरह का कोई दरख्त निश्चित कर दें। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाहु अकबर! तुमने वही बात की है जो मूसा अलैहिस्सलाम की कौम ने उनसे कही थी: 'यामूसज्अल लना इलाहन कमा लहुम आलिहतुन् क़ाला इन्नकुम कौमुन तज्हलून' (सूरत अल-आराफ: 139) - ऐ मूसा! हमारे लिए भी वैसा ही माबूद बना दे जैसे उनके माबूद हैं। उसने जवाब दिया कि यकीनन तुम एक बड़ी जाहिल कौम हो।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यही हरकतें जो तुम कर रहे हो, इनसे तुम भी ज़रूर बल्कि ज़रूर पहले लोगों की तरह चलोगे।

(सुनन-उत-तिर्मिज़ी, किताब-उल-फितन, बाब मा जा ला तरकबुन्ना सुननन मन कान कब्लकुम, हदीस 2180)(अस-सीरतुल हल्बिया भाग-3, पृष्ठ 153, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, भाग-9, पृष्ठ 241, बज़्म-ए-इकबाल, लाहौर)

जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि हुनैन की जंग के लिए दो हज़ार वह नौमुस्लिम नौजवान भी शामिल हुए, जिनके दिलों में इस्लाम और ईमान अभी रासिख भी नहीं हुआ था और जंगी महारत भी कोई खास न थी, यहाँ तक कि उन्होंने हथियारों का भी खास इंतज़ाम न किया। और यही वह लोग थे कि जिनकी वजह से हुनैन में भगदड़ मची, जो वक्तवी परेशानी और पसपाई का बाइस बनी। इसी तरह मक्का से कुछ लोग नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ निकले जो मुसलमान नहीं थे। कुछ सवार और कुछ पैदल। यहाँ तक कि औरतें भी साथ चल पड़ीं जो बस यह देखने के लिए साथ हुई थीं कि जंग का नतीजा क्या निकलता है और अगर मुसलमानों को फतह हुई तो माल-ए-गनीमत मिल जाएगा और उन्हें इससे कोई ग़रज़ न थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को कोई सदमा या तकलीफ़ पहुँचे। उनका एक हिस्सा महज़ तमाशा-बीन के तौर पर साथ शामिल हुआ था और उनमें कुछ मुश्रिकीन भी थे जो मुश्रिक होने की हालत में ही साथ शामिल थे।

इन मुश्रिकीन की संख्या अस्सी के करीब बयान की जाती है, जिसकी वजह से बाज़ सीरत निगारों ने यह भी बयान किया है कि यह वह पहली जंग थी कि जिसमें नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुश्रिकों से भी मदद ली, जबकि इससे पहले नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमेशा किसी भी मुश्रिक को जंग में शामिल न फ़रमाते थे, क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि "इन्ना ला नस्तईनु बि-मुश्रिक" अर्थात हम किसी मुश्रिक से मदद नहीं चाहते। लेकिन उनके मुताबिक जंग-ए-हुनैन में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहली मर्तबा मुश्रिकीन को भी शामिल किया। लेकिन सही बात यह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदद नहीं ली थी।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब जंग-ए-बद्र में भी किसी मुश्रिक की मदद कबूल करने से इनकार फरमा दिया था, जब एक-एक आदमी की बहुत ज़रूरत थी और अहमियत थी, तो अब तो मुसलमानों की इतनी कस्रत थी कि कुरआन के मुताबिक उनकी कस्रत ने उनको उज्ब में मुब्तला कर दिया था, तो भला अब मुट्ठी भर मुश्रिकीन की मदद की क्यों ज़रूरत पड़ती? इसलिए नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हरगिज़ किसी भी मुश्रिक को न शामिल फ़रमाया और न ही किसी मुश्रिक को जंग में शामिल होने के लिए कहा, बल्कि सीरत की किताबों की तफ्सीलात जो हैं, उनसे भी वाजेह होता है कि मक्का से बहुत से लोग अज़-ख़ुद महज़ जंग का नज़ारा करने के लिए और माल-ए-गनीमत के लालच में लश्कर में शामिल हो गए, जिनकी हैसियत महज़ यह थी कि मुसलमानों को फतह तो होनी ही है, चलें! तमाशा देखेंगे और माल-ए-गनीमत लूटेंगे। हाँ! कुछ मुश्रिकीन बदनीयत भी थे, जो इस नीयत से भी शामिल हो गए कि उन्हें मक्का की फतह की ज़िल्लत और नादामी भूल नहीं रही थी और जिस तरह ऐसे लोगों ने मक्का में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़त्ल करने की नाकाम कोशिश की, वह यहाँ भी चले आए कि अगर दुश्मन न मार सका तो शायद हमें इंतिकाम लेने का मौका मिल जाए और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नऊज़ु बिल्लाह क़त्ल करके अपना बदला लेकर सीना ठंडा कर सकें। बहरहाल, बारह हज़ार का लश्कर मक्का से रवाना हुआ और तीन दिन के सफ़र और बाज़ के नज़दीक पाँच दिन के सफ़र के बाद यह हुनैन की वादी में पहुँचा। रास्ते में जब भी कोई ढाल या तलवार या सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का कोई सामान गिर पड़ता तो अबू सुफयान बिन हर्ब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आवाज़ देते कि यह सामान मुझे दे दिया जाए, मैं उसे उठा लेता हूँ, यहाँ तक कि उनका ऊँट सामान से भर गया।

हज़रत सहल बिन हंज़लिया रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हुनैन के दिन चल रहे थे। उन्होंने बहुत लंबा सफ़र किया, यहाँ तक कि शाम हो गई, तो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ में शिरकत की। इतने में एक सवार आया, उसने कहा: या रसूलल्लाह! मैं आप लोगों के आगे-आगे गया, यहाँ तक कि फलाँ-फलाँ पहाड़ पर चढ़ा, तो देखा कि हवाज़िन के लोग अपनी औरतों, अपने ऊँटों और अपनी बकरियों और जानवरों को लेकर जमा हुए हैं। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तबस्सुम फ़रमाया और फ़रमाया: कल इंशाअल्लाह यह मुसलमानों का माल-ए-गनीमत होगा। फिर फ़रमाया: आज रात को कौन हमारा पहरा देगा? अनस बिन अबी मरसद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: मैं दूँगा, या रसूलल्लाह! फ़रमाया: फिर सवार हो जाओ। वह अपने घोड़े पर सवार हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि इस घाटी में जाओ। यह पहरा आपका नहीं था, बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इर्द-गिर्द के इलाके की ख़बर लेने के लिए, उसके पहरे के लिए बात की थी, और उसके ऊँचे हिस्से में चले जाओ और हम तुम्हारी वजह से रात को धोका न खाएँ, अर्थात यह न हो कि तुम ग़ाफिल हो जाओ और दुश्मन धोका दे जाए।

जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी नमाज़ की जगह के लिए निकले। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो रकअत फज्र की सुन्नत पढ़ी। नमाज़ के लिए तकबीर कही गई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ाने लगे। आपका रुख़ घाटी की तरफ था। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ा ली और सलाम फेरा तो फ़रमाया: खुश हो जाओ, तुम्हें बशारत हो कि तुम्हारा सवार आ गया है, अर्थात जिसे ड्यूटी पर मुतअय्यन किया गया था। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम कहते हैं कि हम घाटी में दरख्तों में देखने लगे, यहाँ तक कि वह आ गया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर खड़ा हो गया। उसने सलाम किया और कहा: मैं चलता गया, यहाँ तक कि उस वादी की ऊँची जगह पर चला गया, जहाँ जाने का मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था। जब सुबह हुई तो मैं दोनों वादियों में चढ़ा। मैंने देखा मगर मुझे कोई नज़र न आया। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: रात को तुम नीचे उतरे हो? उसने कहा: नहीं, सिवाय नमाज़ के लिए या क़ज़ा-ए-हाजत के लिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया: तुम्हारे लिए जन्नत वाजिब हो गई। तुमने अच्छी ड्यूटी दी। मुश्रिकीन के जासूसों का ज़िक्र भी मिलता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस शव्वाल, मंगलवार की इशा के वक्त हुनैन पहुँच गए थे। मालिक बिन औफ ने हवाज़िन के तीन आदमियों को बतौर जासूस भेजा कि वह मुसलमानों के लश्कर में फिर कर जाइज़ा लें और सारी तफ्सील

आकर बताएँ। लेकिन यह तीनों जब वापस आए तो वह हवास-बाख्ता थे। मालिक ने कहा: तुम्हारा बुरा हो, तुम्हें क्या हुआ है? उन्होंने जवाब दिया कि हमने घोड़ों पर सफेद आदमियों को देखा है। अल्लाह की कसम! अगर जंग हो गई तो हम इस हालत पर काबू नहीं पा सकेंगे। अल्लाह की कसम! हम ज़मीन वालों से क़िताल नहीं कर सकते, तो हम आसमान वालों से कैसे जंग करेंगे? अगर तू हमारी बात माने तो तू अपनी कौम के साथ वापस चला जा। अगर लोगों ने वही देखा जो कुछ हमने देखा है तो उनको भी वही तकलीफ पहुँचेगी जो हमें पहुँची है। उसने कहा: तुम पर हलाकत हो! तुम लश्कर में से सबसे ज़्यादा बुज़दिल हो। उसने उस खौफ से उन्हें छिपा दिया, बाहर नहीं जाने दिया कि यह ख़बर सारे लश्कर में न फैल जाए। और कहा कि मुझे बहादुर आदमी की ख़बर दो। उन सब ने वहाँ जो लोग थे, उन्होंने एक आदमी पर इत्तिफाक किया कि यह बहुत बहादुर है। फिर भेजा उसको और वह निकला। वह भी जल्दी वापस लौट आया। वह भी उसी तरह मरऊब था जैसे उनके पहले तीन साथी मरऊब थे। उसने, मालिक ने पूछा कि तुमने क्या देखा? तो उस बहादुर ने जवाब दिया कि मैंने ऐसे सफेद लोगों को चितकबरे घोड़ों पर देखा है, जिनकी तरफ देखने की भी ताक़त नहीं है। अल्लाह की कसम! मुझे वह रुब लाहिक हो गया है जिसको तू देख रहा है। मैं उस पर काबू नहीं पा सकता। बेहतर है कि हम यहाँ से वापस लौट जाएँ। लेकिन इसके बावजूद मालिक बिन औफ अपने इरादे से बाज न आया। दुश्मन के जासूसों ने अपने जिस मुशाहिदे का ज़िक्र किया है, सीरत निगारों के बयान के मुताबिक इसके दोनों पहलू मुराद हो सकते हैं। एक गिरोह का यह ख्याल है कि इन जासूसों ने फरिश्तों को देखा और उनको देख कर खौफज़दा हो गए, जबकि एक यह ख्याल हो सकता है कि उन्होंने जब मुसलमानों के लश्कर को देखा तो एक खुदाई रुब उन पर ऐसा तारी हुआ कि वह खौफज़दा हो गए।

(अस-सीरतुल हल्बिया भाग-3, पृष्ठ 153, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (माखूज़ अज़ ग़ज़वा-ए-हुनैन अज़ मुहम्मद अहमद बाशमील, पृष्ठ 123 से 125, 111, नफ़ीस एकेडमी)(दलाइलुन नबुव्वत भाग-5, पृष्ठ 130, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (सुनन अबू दाऊद, किताब-उल-जिहाद, बाब फी फज़लिल हर्स फी सबीलिल्लाह, हदीस 2501, बाब फिल मुश्रिक युसहमु लहु, हदीस 2732) (दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, भाग-9, पृष्ठ 235, 240, बज़्म-ए-इकबाल, लाहौर)(सुबुलुल हुदा भाग-5, पृष्ठ 316, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (अल-लुलुल मक्नून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग-9, पृष्ठ 245-246, 252, दारुस्सलाम)

हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह हवाज़िन पर हमला आवर हुए और उसी दौरान चाश्त के वक्त एक शख्स ऊँट पर आया। उस वक्त हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ खाना खा रहे थे। उस आदमी ने अपना ऊँट बिठा कर रस्सी से बाँधा और आगे हो कर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ बैठ गया और उनके साथ खाना खाया। एक रिवायत में है कि वह लोगों के साथ बातें करने लगा। कहते हैं कि हम काफी थके हुए भी थे, सवारियाँ भी कम थीं, फिर वह शख्स उनसे बातें करने के बाद तेज़ी से अपने ऊँट की तरफ चला गया और जल्दी से रस्सी खोली। उस पर सवार हुआ और ऊँट को भगा कर ले जाने लगा, तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसको देख लिया और फ़रमाया कि यह जासूस है, उसको पकड़ो और क़त्ल कर दो। बनू असलम में से एक शख्स ने ऊँटनी पर सवार हो कर उसका पीछा किया। हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं अपनी ऊँटनी पर उसके पीछे भागा। उसके करीब पहुँच कर आगे से उसके ऊँट की नकेल पकड़ ली। मैंने उसके ऊँट को बिठाया। जब उसने अपना घुटना ज़मीन पर रखा तो मैंने तलवार से वार किया और उस शख्स की गर्दन उड़ा दी और वह नीचे गिर गया। मैंने उसका ऊँट, असलहा और सब सामान ले लिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों से पूछा कि उसको किसने मारा है? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया: इब्ने अकवअ ने। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह सारा सामान भी उसी का है।

(सहीह अल-बुखारी, किताब-उल-जिहाद, बाब अल-हर्बी इज़ा दख़ल दारुल इस्लाम बिग़ैर अमान, हदीस 3051)(सहीह मुस्लिम, किताब-उल-जिहाद वस सीयर, बाब इस्तिहक़ाकुल क़ातिल सलबुल क़तील, हदीस 1754) (सुबुलुल हुदा वर रशाद भाग-5, पृष्ठ 336-337, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, भाग-9, पृष्ठ 250-251, बज़्म-ए-इकबाल, लाहौर)

मुसलमानों की बारह हज़ार की संख्या के मुक़ाबिल दुश्मन की संख्या तीस हज़ार थी।

जंग-ए-हुनैन के वक्त बयान करते हुए कभी दुश्मन की संख्या तीस हज़ार बयान की जाती है, कभी बीस हज़ार और कभी चार हज़ार। इसकी तफ्सील यह है कि मुद्दमुक़ाबिल दुश्मन जंगजू बीस हज़ार थे और अगर उनकी बीवी-बच्चे शामिल कर लिए जाएँ तो तीस हज़ार संख्या बन जाती है। और मालिक बिन औफ ने अपनी फौज के बेहतरीन तीरंदाज मुंतखिब कर के पहाड़ों में छिपा दिए, जो घात लगा कर बैठे हुए थे और जिन्होंने मुसलमानों पर अचानक एकदम हमला कर के मुसलमान लश्कर में इश्तिराकी कैफियत पैदा कर दी। यह चार हज़ार की संख्या में थे।

बनू हवाज़िन के सिपहसालार मालिक बिन औफ ने अपनी फौज की सफ़बंदी इस तरह की कि जब रात दो-तिहाई गुज़र चुकी तो मालिक बिन औफ अपने लश्कर के पास गया और उनको वादी-ए-हुनैन में निश्चित जगहों पर छिपा दिया। यह वादी ऐसी है कि इसमें बहुत सी घाटियाँ और दर्रे हैं। इसमें लोगों को फैला दिया और वह इसमें घात लगा कर बैठ गए कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और आपके अस्हाब पर दफ़अतन हमला कर दें। कुफ्फार की सफ़बंदी यूँ थी कि सबसे आगे घुड़सवार, उनके पीछे पैदा फौज, उनके पीछे औरतें और उनके बच्चे और उनके पीछे दूसरा माल ऊँट, भेड़, बकरियाँ और दूसरे मवेशी।

(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, भाग-9, पृष्ठ 229, 246, बज़्म-ए-इकबाल, लाहौर) (सुबुलुल हुदा वर रशाद भाग-5, पृष्ठ 312, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (ग़ज़वा-ए-हुनैन अज़ बाशमील, पृष्ठ 135 व 140, नफ़ीस एकेडमी) (अल-लुलुल मक्नून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग-9, पृष्ठ 261-262, दारुस्सलाम) (तारीखुल खमीस भाग-2, पृष्ठ 508, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (ग़ज़वातुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अज़ मुहम्मद अब्दुल अहद, पृष्ठ 490-491, ज़ाविया पब्लिशर्ज़)

मक्का से हुनैन की तरफ रवानगी के वक्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू सुलैम का एक हज़ार का घुड़सवार दस्ता फौज के हरओल में रखा और उसकी कमान हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के सुपर्द थी। जब लश्कर जिअराना मकाम पर पहुँचा तो सहरी के वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तमाम लश्कर को मैमना अर्थात दायाँ हिस्सा और मैसरा बायाँ हिस्सा और क़ल्ब अर्थात दरमियाना हिस्सा में तक्सीम फ़रमाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दरमियानी हिस्से में थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहाजिरीन व अन्सार में बड़े झंडे तक्सीम किए।

मुहाजिरीन का एक परचम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सुपर्द किया। निज़ एक परचम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु को और एक परचम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया। अन्सार में से खज़रज का परचम हज़रत हुबाब बिन मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु को इनायत फ़रमाया और औस का परचम हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु को सुपर्द फ़रमाया। इसी तरह हज़रत अबू बुरदा बिन नियार रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबुल लबाबा बिन अब्दिल मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु को भी परचम अता हुए। इसके अलावा बीस से ज़्यादा छोटे-छोटे झंडे भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुख़्तलिफ गिरोहों में तक्सीम फ़रमाए।

(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, भाग-9, पृष्ठ 245, बज़्म-ए-इकबाल, लाहौर) (ग़ज़वा-ए-हुनैन अज़ बाशमील, पृष्ठ 132 से 136, नफ़ीस एकेडमी)(अस-सीरतुल हल्बिया भाग-3, पृष्ठ 153, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

हुनैन के दिन किसी ने कहा कि आज हम थोड़े होने की वजह से मग़लूब नहीं होंगे, अर्थात आज हम बहुत ज़्यादा हैं। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

वसल्लम ने इस बात को सख्त नापसन्द फ़रमाया और कुरआन करीम ने भी इस बात को नापसन्दीदगी की निगाह से देखते हुए इस तरह बयान किया है कि "इज़ अअ्जबतकुम कस्रतुकुम" (सूरत तौबा: 25) अर्थात जब तुम्हारी कस्रत ने तुम्हें तकब्बुर में मुब्तला कर दिया।

हुनैन के मुकाबले में पहले तो मुसलमानों को जीत हुई। फिर दुश्मन के ज़बरदस्त हमले से भगदड़ मच गई, जिसका पहले ज़िक्र हुआ है, और अस्थायी हार हुई, लेकिन आखिरकार मुसलमानों को ज़बरदस्त जीत नसीब हुई। इसकी तफ्सील इस तरह है कि ग़ज़वा-ए-हुनैन के बारे में अमूमन यह बयान किया जाता है कि मुसलमानों का लश्कर सुबह के अंधेरे में हुनैन की वादी में दाखिल हुआ, जबकि कुफ्फार का लश्कर पहले से ही वादी में पहुँच चुका था और उनके बेहतरीन, माहिर तीरंदाज वहाँ घाटियों में छिपे हुए थे। मुसलमान उनसे बे-ख़बर जब वादी में दाखिल हुए तो उन तीरंदाजों ने एकबार हमला कर दिया, जिससे मुसलमानों के लश्कर में भगदड़ मच गई और वापस भागने लगे, यहाँ तक कि सिर्फ नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम वहाँ रह गए, और फिर जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से मुसलसल पुकारा गया तो मुसलमानों का लश्कर वापस पलटा और फिर दुश्मन के साथ एक भरपूर जंग हुई और दुश्मन बुरी तरह पसपा हुआ और मैदान छोड़ कर भाग गया।

(माखूज़ अज़ सीरतुन नबविया लि-इब्ने हिशाम, पृष्ठ 764-765, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (सुबुलुल हुदा भाग-5, पृष्ठ 317, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)
(माखूज़ अज़ ग़ज़वा-ए-हुनैन अज़ बाशमील, पृष्ठ 135-136, नफ़ीस एकेडमी)

इब्ने हिशाम की जो सीरत है, यह उसमें से माखूज़ किया गया है, लेकिन सहीह अल-बुखारी में एक रिवायत है, जिसको देखा जाए तो हुनैन का मुकाबला कुछ मुख्तलिफ तफ्सील लिए हुए है।

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु, जो कि ग़ज़वा-ए-हुनैन में शामिल थे, उनकी रिवायत सहीह अल-बुखारी में बहुत सारी जगह मौजूद है, जिसमें वह बयान करते हैं कि जब हमने बनू हवाज़िन पर हमला किया तो वह शिकस्त खा कर पसपा हो गए और हम माल-ए-गनीमत इकट्ठा करने लगे, तो इस दौरान उन्होंने हम पर तीरों की बौछार कर दी, जिसकी वजह से वह नौजवान, जिनके पास बचाव का कोई सामान भी न था, वह पीठ फेर कर भागे, लेकिन जहाँ तक रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात है तो उस वक्त भी मैदान में डटे रहे। रावी बरा बिन आज़िब कहते हैं: और मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा, आप सफेद खच्चर पर सवार थे और अबू सुफयान बिन हारिस उसकी लगाम पकड़े हुए थे और आप यह फरमा रहे थे: "अन्ननबिय्यु ला कज़िब, अन्नब्रु अब्दिल मुत्तलिब" अर्थात कि मैं नबी हूँ, यह कोई झूठ नहीं है और मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

बुखारी की इस रिवायत के बग़ैर अगर देखा जाए तो जंग-ए-हुनैन के दो मरहले बनते हैं और आम तौर पर सीरत निगार ऐसा ही बयान करते हैं। औव्वल तो मुसलमानों का अचानक हमले की वजह से मुनतशिर होना, और दूम यह कि मुसलमानों का फिर से जमा हो कर हमला करना और दुश्मन को शिकस्त से दो-चार करना। लेकिन अगर बुखारी की इस रिवायत को बुनियाद बनाया जाए, और यही ज़्यादा दुरुस्त मालूम होता है, तो जंग-ए-हुनैन के तीन मरहले बनते हैं।

पहले मरहले में कि मुसलमानों का लश्कर बिला झिझक हुनैन की वादी में दाखिल हुआ तो दुश्मन का जो लश्कर उनके सामने था, वह पसपा होता चला गया और मुसलमानों ने जब उनकी पसपाई देखी तो मुसलमानों का एक हिस्सा माल-ए-गनीमत लूटने में मसरूफ हो गया।

दूसरे मरहले में यह हुआ कि बनू हवाज़िन के सिपहसालार मालिक बिन औफ ने अपने बेहतरीन चार हज़ार तीरंदाज, जो घाटियों में पोशीदा तौर पर मुतअय्यन किए हुए थे, उन्होंने जब देखा कि मुसलमानों का लश्कर वादी में दाखिल हो रहा है, तो उस पर उन्होंने एकबारगी तीरों का ज़बरदस्त हमला कर दिया। बनू हवाज़िन अरब के बेहतरीन तीरंदाज थे। सुबह का अंधेरा और मुसलमानों की एक संख्या माल-ए-गनीमत जमा करने में मसरूफ, और उनमें भी एक संख्या मक्का के उन नौमुस्लिमों की थी, जिनके दिलों में इस्लाम अभी अच्छी तरह रासिख नहीं हुआ था और उनके पास खुद और ज़िरह वगैरह कोई खास हिफाज़ती सामान भी न था कि तीरों से अपना बचाव कर सकते। चुनाँचे, तीरों के इस अचानक हमले से बचने के लिए यह लोग वहाँ से भागे। उनकी सवारियाँ भी थीं। जब यह पीछे की तरफ अचानक भागे तो सारे लश्कर में एक भगदड़-सी मच गई और ऊँटों और घोड़ों ने भागना शुरू कर दिया। जानवर बदकने लगे। घाटी की वजह से रास्ता भी तंग था। जानवर लोगों को पैरों तले रौंदते रहे। लश्कर की इस भगदड़ की वजह से हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु खुद ज़ख्मी हो कर घोड़े से नीचे गिर गए और मुसलमानों का लश्कर मुनतशिर हो गया। यह भी एक सीरत की किताब में लिखा है।

और तीसरा मरहला जो फैसला कुन है, वह इस तरह हुआ, जिसकी हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत की है कि लश्कर के पहले हिस्से के कदम उखड़ गए। सबसे पहले बनू सुलैम का दस्ता भागा, उनके पीछे मक्का के नौमुस्लिम, फिर आम लोग भी उनके पीछे शिकस्त खा कर भागे और किसी की परवा न की, और इतना गुबार उड़ा कि उनमें से कोई एक भी अपनी हथेली को देख न सकता था।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जितनी भी लड़ाइयाँ लड़ीं, उनमें सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि युद्ध के मैदान में हालात चाहे जैसे भी रहे हों, हर युद्ध में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दृढ़ता और साहस की कोई मिसाल नहीं मिलती। जिस समय बड़े-बड़े बहादुरों के भी पैर उखड़ जाते हैं, उस समय भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक चट्टान की तरह वहाँ मौजूद नज़र आते रहे।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सबसे बढ़ कर हसीन व जमील और सबसे ज़्यादा जौद व सखा के हामिल और सब लोगों से बढ़ कर बहादुर थे।

उसी जंग-ए-हुनैन का ज़िक्र करते हुए हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जब तमाम लोग मुनतशिर हो गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने कुछ साथियों के साथ तनहा रह गए और दुश्मन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ बढ़ने लगा, तो ऐसे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले ही दुश्मन की तरफ बढ़ते चले गए और बुलन्द आवाज़ में कहते जा रहे थे कि मैं इब्ने अब्दिल मुत्तलिब हूँ। रावी बयान करते हैं कि खुदा की कसम! जब जंग शिद्दत इख्तियार कर जाती तो हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पनाह में आ जाया करते थे, और सबसे ज़्यादा बहादुर वही समझा जाता था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के करीब रहता था।

इस मौक़े पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जुरअत और बहादुरी की शान यह थी कि ऐसे में भी, जब आप तनहा रह गए थे, आप अपने खच्चर को दुश्मन की तरफ धकेल रहे थे। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं और अबू सुफयान बिन हारिस नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ-साथ ही रहे और एक लम्हे के लिए भी आपसे जुदा नहीं हुए। जब लोग मुनतशिर हो गए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने खच्चर को दुश्मन की तरफ तेज़ी से ले जाने लगे। इस मौक़े पर मैं लगाम पकड़ कर खच्चर को रोकने लगा कि वह और तेज़ न हो, और अबू सुफयान बिन हारिस रकाब थामे हुए थे। एक रिवायत के मुताबिक हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु, जो कि उस वक्त भी आपके साथ ही थे, वह खच्चर की लगाम पकड़ कर उसको रोकने की कोशिश कर रहे थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे फ़रमाया कि ऐ अब्बास! दरख्त वालों को बुलाओ, अर्थात जिन्होंने हुदैबिया के मौक़े पर जान कुर्बान करने के अहद पर बैअत की थी। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु बुलन्द आवाज़ वाले थे। वह कहते हैं कि मैंने बुलन्द आवाज़ से पुकारा: "अस्हाबुस सुमुरह" अर्थात दरख्त वाले कहाँ हैं? वह बयान करते हैं कि अल्लाह की कसम! जब लोगों ने मेरी आवाज़ सुनी तो वह इस तरह वापस लौटे जैसे गाय अपने बच्चे की तरफ पलटती है, और वह लोग पुकारने लगे: लब्बैक लब्बैक, या रसूलल्लाह! हम हाज़िर हैं, हम हाज़िर हैं। और वह दीवाना वार वापस लौटे और दुश्मन से जंग शुरू कर दी।

यह सहीह मुस्लिम की रिवायत है। वर्णन किया जाता है कि जब मुसलमानों का लश्कर इश्तिराक का शिकार हुआ तो नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कुछ अफराद मौजूद थे, और उनकी संख्या चार से ले कर तीन सौ तक बयान की जाती है।

तादाद के इख्तिलाफ की वजह यह भी हो सकती है कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बिलकुल पास कुछ अफराद होंगे, और बाकी कुछ लोग मुख्तलिफ जगहों पर दुश्मन से मुकाबला कर रहे होंगे, और यूँ मैदान-ए-जंग में तीन सौ के करीब अफराद होंगे, या नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लोगों की संख्या मुख्तलिफ अुकात में कम-ओ-बेश होती रही होगी, और जिसने तीन या चार लोग देखे, उसने वह संख्या बयान कर दी, जिसने दस-बारह देखे, उसने वह संख्या बयान कर दी, और जिसने उससे ज़्यादा अफराद देखे, उसने वह संख्या बयान कर दी। बहरहाल, एक वक्त ऐसा रहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास सिर्फ कुछ एक अफराद ही रह गए।

एक और रिवायत में है कि एक शख़्स ने हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि ऐ अबू अम्मारा! क्या तुम हुनैन के दिन फ़रार इख़्तियार कर गए थे? उन्होंने कहा: अल्लाह की कसम! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पीठ नहीं दिखाई, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में से जल्दबाज नौजवान, जिनके पास हथियार न थे या बहुत कम हथियार थे, जब उनकी ऐसी तीरंदाज कौम से मुठभेड़ हुई, जिनका कोई तीर खता न जाता था, अर्थात हवाज़िन और बनू नस्र के जत्थे से। उन्होंने मुसलसल तीरंदाजी की, जिनका कोई तीर शाज़ ही खता जाता, तो उस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुश्मन की तरफ आगे बढ़े, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सफेद खच्चर पर सवार थे और अबू सुफयान बिन हारिस उसे चला रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उतरे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह से मदद चाही और फ़रमाया: "अन्ननबिय्यु ला कज़िब, अन्नब्नु अब्दिल मुत्तलिब" अर्थात मैं नबी हूँ और यह कोई झूठ नहीं है और मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

इयास बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद सलमा बिन अकवअ रज़ियल्लाहु अन्हु से बयान करते हैं। वह कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में ग़ज़वा-ए-हुनैन की तरफ गए। जब हमारा दुश्मन से सामना हुआ तो मैं आगे बढ़ा और एक घाटी पर चढ़ा कि दुश्मन के एक शख़्स से मेरा सामना हुआ। मैंने उसे तीर मारा तो वह मुझसे छिप गया। मुझे पता नहीं चला कि उसे क्या हुआ। मैंने देखा कि लोग दूसरी घाटी से निकल रहे हैं। उनमें और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में जंग हुई और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम वापस मुड़ गए। मैं पसपा हो कर लौटा। मुझ पर दो चादरें थीं। एक मैं बाँधे हुए था और दूसरी ऊपर लिए हुए था। मेरी चादर खुलने लगी तो मैंने दोनों को इकट्ठा कर लिया और मैं पीछे हटता हुआ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने से गुज़रा। आप सियाह-ओ-सफेद रंग के खच्चर पर थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इब्ने अकवअ ने कोई परेशानी देखी है, इस हालत में वापस क्यों दौड़ रहा है।

(सहीह अल-बुखारी, किताब-उल-मग़ाजी, बाब ग़ज़वत-ए-हुनैन, हदीस 4317) (सहीह अल-बुखारी, किताब-उल-जिहाद वस सीयर, बाब मन सफ्फा अस्हाबहु..., हदीस 2930)(सहीह मुस्लिम, किताब-उल-जिहाद वस सीयर, बाब फी ग़ज़वत-ए-हुनैन, हदीस 1777, 1776, 1775) (सुनन इब्ने माजा, किताब-उल-जिहाद, बाब अल-खुरूज फिन नफ़ीर, हदीस 2772) (दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, भाग-9, पृष्ठ 253 से 255, बज़्म-ए-इकबाल, लाहौर)(मजमउल ज़वाइद भाग-6, पृष्ठ 189-190, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (सुबुलुल हुदा वर रशाद भाग-5, पृष्ठ 318, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)(तारीखुल खमीस भाग-2, पृष्ठ 513, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

हज़रत मसीह-ए-मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हुनैन के दिन तीर खा कर वापस मुड़ने के वाक़िए का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि: "ग़ज़वा-ए-हुनैन में जब मुसलमानों का लश्कर पीछे हटा, क्योंकि दुश्मन के तीरों के हमले ने शिद्दत इख़्तियार कर ली थी, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिर्फ कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को साथ ले कर दुश्मन की तरफ आगे बढ़े। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह देख कर कि दुश्मन का हमला शदीद है, आपको रोकना चाहा और आगे बढ़ कर आपके घोड़े की बाग पकड़ ली, मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: छोड़ दो मेरे घोड़े की बाग को। इसके बाद आप यह शेअर पढ़ते हुए आगे बढ़े: 'अन्ननबिय्यु ला कज़िब, अन्नब्नु अब्दिल मुत्तलिब' अर्थात मैं खुदा तआला का नबी हूँ और झूठा नहीं हूँ और मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ। आपका यह फरमाना कि मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ, इसका यह मतलब था कि इस वक्त दुश्मन का हमला इतना शदीद है कि दुश्मन के चार हज़ार तीरंदाज तीरों की बारिश बरसा रहे हैं, इस हालत में मेरा आगे बढ़ना इंसानियत की शान से बहुत बुलन्द और बाला नज़र आता है, इससे कोई धोखा न खाए और यह न समझे कि मुझ में खुदाई ताक़तें हैं। मैं तो अब्दुल मुत्तलिब का बेटा ही हूँ और एक बशर हूँ, सिर्फ अल्लाह तआला की मदद मेरे नबी होने की वजह से मेरे साथ है।"

(खौफ और उम्मीद का दरमियानी रास्ता, अनवारुल उलूम भाग-19, पृष्ठ 47)

सारे लोग फ़रार नहीं हुए थे, इस बारे में भी रिवायतें हैं। इमाम नववी लिखते हैं कि सब लोग नहीं भागे थे, बल्कि मक्का के "मुअल्लफ़तुल कुलूब" लोगों में से जो मुनाफिक लोग थे और मक्का के दूसरे लोग जो इस जंग में शरीक हो गए थे और अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे, उन्होंने भागना शुरू कर दिया था, और यह नागहानी शिकस्त इस वजह से हुई कि दुश्मनों ने एक साथ तीरों की बारिश कर दी थी।

(अल-मिन्हाज शरह मुस्लिम, अज़ अल्लामा नववी, पृष्ठ 1374, मतबूअ दार इह्ने हज़्म)

बहरहाल, इमाम नववी की यह बात दुरुस्त है कि मैदान-ए-जंग से डर और खौफ के मारे फ़रार होने वाले तमाम मुसलमान बिलकुल भी नहीं थे। अर्थात सब लोग नहीं दौड़े थे, वह सिर्फ मक्का के नौमुस्लिम थे, जिनमें एक संख्या उन लोगों की भी थी जो दिल से लड़ाई के लिए शामिल नहीं हुए थे। वह तो माल-ए-गनीमत के लालच में या महज़ तमाशाई की हैसियत से शामिल हुए थे। लेकिन यह भी हकीकत है कि उनके भागने की वजह से और ज़बरदस्त तीरंदाजी की वजह से दूसरे मुसलमानों की सवारियाँ बदक गई थीं, और वह सवारियाँ उन मुसलमानों को अपने साथ ले कर भाग खड़ी हुई थीं, और बहुत बड़ी संख्या इस तरह दौड़ी थी जो इरादतन नहीं दौड़े थे, मगर बदकी हुई सवारियों की वजह से पीछे मुड़ गए, जिसकी वजह से मुख्लिस और वफादार मुसलमान भी कुछ देर के लिए बे-बस हो गए थे। बहरहाल, इसकी मज़ीद तफ्सीलात भी हैं। इंशाअल्लाह आइंदा बयान होंगी।

आज से जर्मनी का जलसा सालाना भी शुरू हो गया है। वहाँ के तमाम शामिलीन को दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला उन्हें जलसे के मक़ासिद को पूरा करने की तौफीक दे और सिर्फ मेला समझ कर यहाँ जमा न हों, बल्कि इन दिनों में अपनी इल्मी, अमली और रूहानी तरक्की में मुस्तकिल बढ़ते चले जाने का अहद करें और इसके लिए कोशिश करें। इन दिनों में खास तौर पर ज़िक्र-ए-इलाही और दुआओं में वक्त गुज़ारें। जहाँ अपने लिए अपनी नस्लों के लिए दुआ करें, वहाँ जमात की तरक्की और हर मुख़ालिफ के शर से अल्लाह तआला की पनाह में आने और उनके शर के खात्मे के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनके शर से बचाए। पाकिस्तान में आए दिन कोई न कोई तकलीफ़देह वाक़िया हो जाता है। अल्लाह तआला जल्द ही इन मुख़ालिफ़ीन की पकड़ के सामान फ़रमाए। आम तौर पर दुनिया के अमन के लिए भी दुआ करें। यह दुनिया वाले अपने अमल की वजह से अपनी तबाही के करीब तर होते चले जा रहे हैं। अल्लाह तआला हमें इस खौफनाक तबाही से बचाए। फिलिस्तीनियों के लिए भी दुआ करें, इसराइली हुकूमत ने तो अब ज़ुल्म व बर्बरियत की इन्तिहा कर दी है। लगता है कि फिलिस्तीनियों को सफ्हा-ए-हस्ती से ही मिटाना चाहते हैं। मज़लूम बच्चों, औरतों, बूढ़ों और बीमारों, मासूमों पर ज़ुल्म की हद हो गई है। एक कत्ल-ए-आम हर जगह हो रहा है। अब तो बाज़ दुनियादार सियासतदान और हुकूमतें भी कुछ आवाज़ उठाने लग गई हैं कि यह गलत है, बंद करो इसे। लेकिन उनकी बातें भी अब इसराइली हुकूमत सुनने को तैयार नहीं। दौलत और ताक़त के नशे ने उनको और अमरीका और उसके हमनवाओं को तकब्बुर और ज़ुल्म की इन्तिहा तक पहुँचा दिया है। मुसलमान हुकूमतें जो हैं, वह भी कुछ नहीं कर रही हैं। अगर कुछ नहीं कर सकतीं तो कम-अज़-कम अपनी हालतों को बदल कर अल्लाह तआला के आगे ही झुकें, ता कि अल्लाह तआला ही उनकी मदद को आए। काश! कि उनको यह भी अक्ल आ जाए। इसी तरह मुसलमान मुसलमानों पर ज़ुल्म कर रहे हैं। अल्लाह तआला उनको भी इस ज़ुल्म से रोके।

आज यह हम अहमदियों का काम है कि इन सब ज़ुल्मों के ख़िलाफ़ जहाँ-जहाँ बस चलता है आवाज़ पहुँचाएँ और खास तौर पर दुआएँ करें और दिल के दर्द से दुआएँ करें। अल्लाह तआला इसकी तौफीक अता फ़रमाए।

(अल-फज़ल इंटरनैशनल, 19 सितम्बर 2025, पृष्ठ 2 से 7)

★ ★ ★

130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा। सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 130वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

5 नवंबर 2018, सोमवार

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने सुबह पाँच बजकर चालीस मिनट पर मस्जिद बैतुर रहमान में तशरीफ़ लाकर फज्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, ख़तों और रिपोर्टों को देखा और हिदायतों से नवाज़ा। हज़ूर-ए-अनवर विभिन्न दफ़्तरी कार्यों में व्यस्त रहे।

कार्यक्रम के अनुसार डेढ़ बजे हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुर रहमान के एक हॉल में तशरीफ़ लाए जहाँ विभिन्न शाखाओं की समूह तस्वीरों का कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

निम्नलिखित 28 शाखाओं ने बारी-बारी से समूहों में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर लेने की सऊद हासिल की।

ग्रुप सिक्योरिटी हिफ़ाज़त-ए-खास, सदस्य राष्ट्रीय मजलिस-ए-आमला जमात यूएसएमुबल्लिग़ीन-ए-किराम यूएसए, कार्यकर्ता शोबा ज़ियाफत (जनरल), कार्यकर्ता शोबा ज़ियाफत, शोबा मुलाकात

प्रशासन जिन्होंने दौरे के कार्यक्रम आयोजित किए, शोबा तालीमुल कुरआन, वक्फ़ आरज़ी (तकरीबात आमीन आयोजन), शोबा रिहाइश

शोबा पार्किंग व ट्रैफिक कंट्रोल * शोबा स्टाफ, प्रशासन मस्जिद बैतुर रहमान, शोबा समई व बसरी (लोकल), मजलिस-ए-आमला खुद्दामुल अहमदिया यूएसए, शोबा क़ज़ा, शोबा उमूर-ए-खारिजिया

ग्रुप अत्फालुल अहमदिया (जिन्होंने वक्फ़ आरज़ी में हिस्सा लिया)। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने शफ़क़त के तौर पर इन बच्चों को क़लम अता फ़रमाए।

मीडिया टीम, शोबा उमूर-ए-आम्मा, शिक्षक, तुलबा जामिया अहमदिया कनाडा, मुबल्लिग़ीन-ए-किराम जमात अहमदिया कनाडा, स्टाफ एमटीए टेलीपोर्ट यूएसए, शोबा क़ाफिला ट्रांसपोर्ट, शोबा फोटोग्राफर्स, शोबा जाएदाद

शोबा सिक्योरिटी (खुद्दाम जो विभिन्न बाहरी पोस्टों पर तैनात थे)

एमटीए इंटरनेशनल लंदन (केंद्रीय टीम एमटीए जिसने इस दौरे की पूरी कवरेज की)

तस्वीरों के इस कार्यक्रम के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुर रहमान में तशरीफ़ लाकर ज़हर और अस्र की नमाज़ एकत्रित करके पढ़ाई। नमाज़ों के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

दोपहर बाद भी हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ विभिन्न कार्यों में व्यस्त रहे।

कार्यक्रम के अनुसार छह बजे हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुर रहमान में तशरीफ़ लाकर मग़रिब और इशा की नमाज़ एकत्रित करके पढ़ाई। नमाज़ों के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ अपने आवासीय हिस्से में तशरीफ़ ले गए।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के अमेरिका दौरे का आज अंत हो रहा था। आज शाम अमेरिका से वापस लंदन, ब्रिटेन के लिए रवानगी थी। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ को विदा कहने के लिए दोपहर से ही अहबाब-ए-जमात विभिन्न जमातों से मस्जिद बैतुर रहमान में एकत्रित होने लगे थे।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की बारकत वाली मौजूदगी में राष्ट्रीय मजलिस-ए-आमला जमात अहमदिया यूएसए की एक तस्वीर

हज़ूर-ए-अनवर की अमेरिका से रवानगी

सात बजकर चालीस मिनट पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान से बाहर तशरीफ़ लाए। हज़ूर-ए-अनवर के चेहरे मुबारक पर नज़र पड़ते ही अहबाब-ए-जमात ने बड़े जोश और उल्लास के साथ नारे लगाए। सभी के हाथ ऊपर थे। महिलाएँ अपने हाथ हिलाते हुए शर्फ़-ए-ज़ियारत से फ़ैज़याब हो रही थीं। बच्चियाँ समूहों में विदाई दुआई नज़्में पढ़ रही थीं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने शफ़क़त के तौर पर अहबाब के निकट तशरीफ़ ले गए और कुछ समय के लिए अहबाब में मौजूद रहे। इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने दुआ कराई। इस दौरान बड़े दिलचस्प दृश्य देखने को मिले। अहबाब व महिलाएँ यहाँ तक कि बच्चों की आँखों में भी आँसू नज़र आ रहे थे। हर छोटा-बड़ा उदास था। जब हज़ूर-ए-अनवर की गाड़ी मस्जिद बैतुर रहमान के बाहरी परिसर से रवाना हुई तो अहबाब के हाथ हवा में ऊँचे थे और हर तरफ़ से अस्सलामो अलैकुम, फ़ी अमानिल्लाह और खुदा हाफ़िज़ की आवाज़ें आ रही थीं।

लगभग आठ बजकर चालीस मिनट पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की एयरपोर्ट पर तशरीफ़ आवरी हुई।

हज़ूर-ए-अनवर के एयरपोर्ट पर आने से पहले ही सामान की बुकिंग और बोर्डिंग पास प्राप्त करने की कार्रवाई पूरी हो चुकी थी। जैसे ही हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए, एयरपोर्ट के प्रोटोकॉल अधिकारी ने हज़ूर-ए-अनवर का स्वागत किया और हज़ूर-ए-अनवर को अपने साथ एयरपोर्ट के अंदर ले गए।

इमिग्रेशन के लिए एक अलग जगह विशेष रूप से आरक्षित करके विशेष प्रबंध किया गया था। इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ एक विशेष लाउंज में तशरीफ़ ले गए।

दस बजकर पंद्रह मिनट पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ जहाज़ पर सवार हुए।

श्रीमान साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब, अमीर जमात यूएसए, मुहतरमा साहिबज़ादी उम्मतुल मुसव्विर साहिबा, अहलीया अमीर साहिब अमेरिका, श्रीमान डॉक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब, नाइब अमीर जमात अमेरिका, श्रीमान मलिक वसीम अहमद साहिब, नाइब अमीर जमात अमेरिका, श्रीमान मुनअम नईम साहिब, चेयरमैन ह्यूमैनिटी फर्स्ट यूएसए, हज़ूर-ए-अनवर को विदा कहने के लिए हज़ूर-ए-अनवर के साथ एयरपोर्ट के अंदर तक आए थे। इन सभी अहबाब ने हज़ूर-ए-अनवर से शर्फ़-ए-मुसाफ़हा हासिल किया। साहिबज़ादी उम्मतुल मुसव्विर साहिबा ने हज़रत बेगम साहिबा मद्दज़िल्लहा अलिया को विदा कहा। इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर जहाज़ के अंदर तशरीफ़ ले गए।

लंदन वापसी

ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट BA292 दस बजकर चालीस मिनट पर वाशिंगटन के डलस इंटरनेशनल एयरपोर्ट से हीथ्रो एयरपोर्ट लंदन के लिए रवाना हुई। लगभग साढ़े छह घंटे की निरंतर उड़ान के बाद ब्रिटेन के स्थानीय समय के अनुसार 6 नवंबर, मंगलवार की सुबह दस बजकर पच्चीस मिनट पर हज़ूर-

ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ का जहाज़ हीथ्रो एयरपोर्ट लंदन पर उतरा। जहाज़ के दरवाज़े पर एयरपोर्ट के एक प्रोटोकॉल अधिकारी ने हज़ूर-ए-अनवर का स्वागत किया।

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर विशेष प्रबंध के तहत एक विशेष लाउंज में तशरीफ़ ले आए। इसी लाउंज में श्रीमान रफ़ीक अहमद हयात साहिब, अमीर जमात यूके, श्रीमान मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब, एडिशनल वकीलुल माल लंदन और श्रीमान इमरान ज़फ़र साहिब, मुहतमिम-ए-उमूमी मजलिस खुद्दामुल अहमदिया यूके ने हज़ूर-ए-अनवर का स्वागत किया। इसी लाउंज में इमिग्रेशन अधिकारी ने आकर पासपोर्ट देखे।

ग्यारह बजकर पैंतीस मिनट पर एयरपोर्ट से मस्जिद फ़ज़ल लंदन के लिए रवानगी हुई। लगभग साढ़े बारह बजे हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की मस्जिद फ़ज़ल लंदन तशरीफ़ आवरी हुई। जहाँ अहबाब-ए-जमात, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों ने बड़ी संख्या में अपने प्यारे आका का स्वागत किया और हज़ूर-ए-अनवर को ख़ुश आमदीद कहा। मस्जिद फ़ज़ल के बाहरी परिसर को झंडियों से सजाया गया था। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ ऊँचा करके सभी को अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सैय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीहुल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के अमेरिका और ग्वाटेमाला के इस सफ़र में हज़रत बेगम साहिबा मद्दज़िल्लहा अलिया के अलावा, जिन व्यक्तियों को हज़ूर-ए-अनवर के काफ़िले में शामिल होने की सऊद हासिल हुई, उनके नाम इस प्रकार हैं:

श्रीमान मुनिर जावेद साहिब (प्राइवेट सेक्रेटरी)

श्रीमान आबिद वहीद ख़ान साहिब, (इंचार्ज प्रेस एंड मीडिया ऑफिस लंदन व विशेष मंदूब अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल बराए दौरा-ए-अमेरिका व ग्वाटेमाला)

श्रीमान सैय्यद मुहम्मद अहमद नासिर साहिब (नाइब अफ़सर हिफ़ाज़त-ए-खास लंदन)

श्रीमान नासिर अहमद सईद साहिब (शोबा हिफ़ाज़त)

श्रीमान महमूद अहमद ख़ान साहिब (शोबा हिफ़ाज़त)

श्रीमान सख़ावत अली बाजवा साहिब (शोबा हिफ़ाज़त)

श्रीमान मिर्ज़ा लईक अहमद साहिब (शोबा हिफ़ाज़त)

विनीत अब्दुल माजिद ताहिर (एडिशनल वकीलुत तबशीर लंदन)

अमेरिका से डॉक्टर श्रीमान तनवीर अहमद साहिब इस पूरे सफ़र के दौरान ड्यूटी पर काफ़िले के साथ रहे। अमीर साहिब अमेरिका ने उन्हें सफ़र के आरंभ से दो दिन पहले ही लंदन भेज दिया था जहाँ से ये काफ़िले के साथ रहे।

श्रीमान डॉक्टर हामिदुल्लाह ख़ान साहिब (यूके) को भी अमेरिका में ठहरने के दौरान काफ़िले में शामिल होने की सऊद नसीब हुई।

एमटीए (MTA) इंटरनेशनल यूके के निम्नलिखित सदस्यों ने अमेरिका और ग्वाटेमाला से कुछ कार्यक्रमों की लाइव ट्रांसमिशन और विभिन्न कार्यक्रमों की कवरेज और रिकॉर्डिंग के लिए इस दौरे में शामिल होने की सऊद हासिल की।

श्रीमान मुनिर औदा साहिब, श्रीमान तौक़ीर अहमद मिर्ज़ा साहिब, श्रीमान ग़ालिब ख़ान साहिब, श्रीमान अदनान जाहिद साहिब, श्रीमान हामिदुल्लाह नासिर साहिब, श्रीमान सफ़ीरुद्दीन क़मर साहिब, श्रीमान अली अहमद साहिब (सोशल मीडिया)

एमटीए अफ्रीका के तहत अफ्रीकी देशों में इस दौरे की कवरेज के लिए उमर सफ़ीर साहिब, इंचार्ज एमटीए अफ्रीका ने शामिल होने की सऊद हासिल की।

रिव्यू ऑफ रिलिजन्स के तहत इस दौरे की कवरेज के लिए श्रीमान आमिर सफ़ीर साहिब, एडिटर रिसाला रिव्यू ऑफ रिलिजन्स ने शामिल होने का शर्फ़ पाया।

केंद्रीय शोबा मख़ज़न-ए-तसावीर से श्रीमान उमैर अलीम साहिब, इंचार्ज शोबा और ग़ादिर अहमद साहिब ने शामिल होने की सऊद हासिल की।

अल्लाह तआला इन सभी अहबाब के लिए यह सऊद मुबारक फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

का वह आखिरी बिंदु है जहां पहुंच कर खुदा के गुण उसके दिल के आईने में प्रतिबिंबित होने लगते हैं और वह उसकी महिमा और सौंदर्य का प्रतिबिंब बन जाता है। उससे दुश्मनी रखने वाले अल्लाह तआला से दुश्मनी रखने वाले ठहराए जाते हैं और उससे मुहब्बत रखने वाले अल्लाह तआला की बरकतों और उसके इनामों के पात्र बनते हैं। इसी मकाम की तरफ बानी-ए-सिलसिला अहमदिया ने एक जगह इशारा करते हुए फ़रमाया है कि:

"ऐ वह जो मेरी तरफ सैकड़ों कुल्हाड़ियों के साथ दौड़ा चला आ रहा है, माली से डर कि मैं फलदार शाख हूं।"

यानी ऐ वह शख्स जो मेरी तरफ कुल्हाड़े लेकर इस नीयत से दौड़ा चला आ रहा है कि तू मेरे लगाए हुए बाग को काट दे, तो बागवान से डर कि मैं वह शाख नहीं हूं जो काटी जा सके। तेरी तदबीरे उलट कर तुझ पर ही पड़ेंगी और तेरा मंसूबा खुद तुझे ही तबाह कर देगा। क्योंकि मेरे सिर से पैर तक मेरा अल्लाह मुझ में छिपा हुआ है और हमला करने वाला मुझ पर हमला नहीं करता बल्कि अल्लाह पर हमला करता है और कौन है जो अल्लाह पर अपने हमले में कामयाब हो सके।

(तफ्सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 147, मतबूआ कादियान 2010)

★ ★ ★

अख़बार बदर खुद भी पढ़ें और अपने मित्रों व परिचितों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

हमारे मार्गदर्शक हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने अख़बार बदर के दिसंबर 2014 के विशेषांक के लिए अपना संदेश भेजते हुए फ़रमाया:

"अख़बार बदर के प्रबंधन और पाठकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इस अख़बार का प्रकाशन जमाअत के सदस्यों की आध्यात्मिक सुधार और प्रगति के लिए किया गया था। हमारे बुजुर्गों ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, पूर्ण लगन के साथ इसे निरंतर जारी रखने का प्रयास किया और उनकी प्रार्थनाओं पवित्र प्रयासों के आशीर्वाद से ही यह आज तक प्रकाशित हो रहा है। यह बात इस मांग को जन्म देती है कि अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाएं। अल्लाह तआला अपनी कृपा से भारत के अहमदियों को विशेष रूप से और दुनिया भर में रहने वाले अहमदियों को सामान्य रूप से, इसके अध्ययन और इससे जुड़े आशीर्वादों को प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यद-हुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक उपदेश को ध्यान में रखते हुए, अहमदिया जमाअत के सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक घर में अख़बार बदर के अध्ययन को सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। अख़बार बदर में कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उच्च वचनों के अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमअः के उपदेश, भाषणों, साथ ही साथ हज़ूर अनवर के विभिन्न देशों की पवित्र यात्राओं की अत्यंत रोचक और ईमान बढ़ाने वाली रिपोर्टें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला की कृपा और हमारे मार्गदर्शक हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दया से अब यह अख़बार उर्दू के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी साथियों ने अभी तक अख़बार बदर अपने नाम से जारी नहीं करवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर अपने नाम से जारी करवाकर स्वयं भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को भी इसे पढ़ने का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हमारे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों पर, उनकी वास्तविक भावना के अनुसार, पूर्ण रूप से अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

अख़बार बदर के समय पर न पहुंचने, चंदे की अदायगी, या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया कार्यालय प्रबंधक, साप्ताहिक अख़बार बदर से संपर्क करें।

(प्रबंधन)

★ ★ ★

क्या बेटा अपनी माँ की मय्यत को ग़ुस्ल दे सकता है?
कर्ज़ के लेन-देन में औरत की गवाही के बारे में रहनुमाई
शेयर्स और स्टॉक मार्केट आदि के कारोबार में सूदी अंशों के पाए जाने के बारे में रहनुमाई

क्या इस्लाम में बच्चों को गोद लेने की अनुमति है तथा उनके क्या अधिकार हैं?
क्या इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार दूध बैंक स्थापित करने की अनुमति है?
वित्र पढ़ने का सही तरीका क्या है तथा छुट्टियों के दौरान किराए पर लिए अपार्टमेंट के बर्तनों का उपयोग किया जा सकता है?
.मुसलमानों पर शादी करना क्यों फर्ज है?
बैंक के प्रबंधन में इंजीनियर के रूप में या बैंक की स्वामित्व वाली किसी इंजीनियरिंग कंपनी में नौकरी करना जायज़ है? क्योंकि इससे सूद और शराब के काम पर सहयोग होता है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-44-45)

प्रश्न: कादियान से एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहुल अज़ीज़ की खिदमत-ए-अक्दस में लिखा कि मेरी माँ ने वफात से पहले मुझे कहा था कि उनकी वफात के बाद मैं उन्हें ग़ुस्ल दूं। लेकिन मेरी माँ की वफात कोरोना से हुई इसलिए उन्हें ग़ुस्ल नहीं दिया जा सका। जिसकी वजह से मुझे बहुत तकलीफ है। इस बारे में रहनुमाई फ़रमाएं कि क्या मैंने दुरुस्त किया है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने पत्र तिथि 19 सितंबर 2021 में इस सवाल के बारे में दर्ज़ ज़िल रहनुमाई फरमाई। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: असल बात यह है कि आम हालात में औरत की मय्यत को औरतें और मर्द की मय्यत को मर्द ही ग़ुस्ल देते हैं। सिवाय पति-पत्नी के कि वह एक दूसरे की मय्यत को ग़ुस्ल दे सकते हैं।

इसलिए आपने बहुत अच्छा किया कि अपनी माँ की मय्यत को ग़ुस्ल नहीं दिया। और वैसे भी जैसा कि आपने लिखा है कि उनकी वफात कोरोना वायरस की वजह से हुई थी इसलिए तिब्बी तौर पर भी आपको उन्हें ग़ुस्ल देने की इजाज़त नहीं मिलनी थी। इसलिए आपको इस वजह से किसी किस्म की परेशानी में मुब्तिला होने की ज़रूरत नहीं है। अल्लाह तआला आपकी माँ के साथ रहम और मग़फिरत का सुलूक फ़रमाए, उनके दर्जे बुलंद फ़रमाए, आप सब लावाहिकीन को सब्र-ए-जमील अता फ़रमाए और उनकी नेकियों और दुआओं का वारिस बनाए। आमीन।

प्रश्न: जर्मनी से एक दोस्त ने, कर्ज़ का लेन-देन करते वक्त गवाह ठहराने के बारे में सूरत-अलः-बकरा की आयत की रोशनी में औरत की गवाही के बारे में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहुल अज़ीज़ से रहनुमाई चाही। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने पत्र तिथि 21 सितंबर 2021 में इस सवाल के बारे में दर्ज़ ज़िल हिदायत फरमाई। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: मुखालिफ़ीन-ए-इस्लाम की तरफ से इस्लामी तालीम पर जो बड़े-बड़े इतराज़ किए जाते हैं, उनमें से एक इतराज़ यह है कि इस्लाम ने मर्द के मुकाबले में औरत की गवाही को आधा रख कर गोया औरत को कमतर क़रार दिया है। लेकिन यह इतराज़ भी दूसरे इतराज़ात की तरह इस्लामी तालीमात की हकीकत और उसकी रूह को न समझने की वजह से बला वजह घड़ा गया है।

हकीकत यह है कि कुरान करीम ने किसी जगह यह नहीं फ़रमाया कि मर्द के मुकाबले में औरत की गवाही निस्फ है। बल्कि अगर कुरान करीम पर गौर किया जाए तो जिन उमूर का औरत से सीधा ताल्लुक है, उनमें जिस तरह मर्द की गवाही को कुबूल किया गया है उसी तरह औरत की गवाही को भी तस्लीम किया गया है। चुनांचे सूरत-अन-नूर में पति-पत्नी के दरमियान लिआन की सूरत में जो गवाही का तरीक़ा बयान किया गया है उसमें औरत और मर्द दोनों की गवाही और कसम में कोई फर्क नहीं रखा गया बल्कि दोनों का बिल्कुल एक ही नतीजा निकाला गया है। चुनांचे अल्लाह तआला फरमाता है: वल्लज़ीना यरमूना अज़्वाजहुम वलम यकुन लहुम शुहदाओ इल्ला अनफुसहुम फशहादतु अहदिहिम अरबा उशहादातिन बिल्लाहि इन्नहू लमिनास सादिकीन। वल्खामिसतु अन्ना लअनतल्लाहि अलैहि इन काना मिनल काजिबीन। वयद्रऊ अनहल अज़ाबा अन तशहदा अरबा शहादातिन बिल्लाहि इन्नहू लमिनल काजिबीन। वल्खामिसता अन्ना ग़ज़बल्लाहि अलैहा इन काना मिनस सादिकीन। (सूरत-अन-नूर: 7 से 10) तर्जुमा: और जो लोग अपनी बीवियों पर इल्ज़ाम लगाते हैं और उनके पास सिवाय अपने वजूद के और कोई गवाह नहीं होता तो उनमें से हर शख्स को ऐसी गवाही देनी चाहिए जो अल्लाह की कसम खा कर चार गवाहियों पर मुशम्मिल हो और (हर गवाही में) वह यह कहे कि वह रास्तबाज़ों में से है। और पांचवीं (गवाही) में (कहे) कि उस पर खुदा की लानत हो, अगर वह झूठों में से हो। और उस बीवी से (जिस पर उसका शौहर इल्ज़ाम लगाए) उसका अल्लाह की कसम खा कर चार गवाहियां देना कि वह (शौहर) झूठा है अज़ाब दूर कर देगा। और पांचवीं (कसम) इस तरह (खाए) कि अल्लाह का ग़ज़ब उस (औरत) पर नाजिल हो अगर वह (इल्ज़ाम लगाने वाला शौहर) सच्चा है।

इसी तरह हदीस में भी आता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सिर्फ एक औरत की गवाही पर कि उसने एक शादीशुदा जोड़े में से लड़के और लड़की दोनों को दूध पिलाया था, उन दोनों के दरमियान अलहिदगी करवा दी। चुनांचे हज़रत उकबा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने अबू ऐहाब बिन अज़ीज़ की लड़की से निकाह किया उसके बाद एक औरत ने आ कर बयान किया कि मैंने उकबा को और उस औरत को जिससे उकबा ने निकाह किया है दूध पिलाया है (फिर यह दोनों रिजाई बहन-भाई हैं, उनमें निकाह दुरुस्त नहीं) उकबा ने कहा कि मैं नहीं जानता कि तूने मुझे दूध पिलाया है और न तूने (इससे) पहले कभी इस बात की इत्तिला दी है। फिर उकबा सवारी पर सवार हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास मदीना गए और आप से (यह मसला) पूछा तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अब जबकि यह बात कह दी गई है तुम किस तरह उसे अपने निकाह में रख सकते हो। फिर उकबा ने उस औरत को छोड़ दिया। और उसने दूसरे शख्स से निकाह कर लिया। (सहीह बुखारी, किताब-उल-इल्म, बाब-अर-रिहला फिल मसअला अन-नाजिला व तअलीमि अहलिही)

जहां तक कर्ज़ के लेन-देन में मर्द और औरत की गवाही का ताल्लुक है तो अमूमन ऐसे मामलात का चूंकि मर्दों से ताल्लुक होता है और औरतों से सीधा ताल्लुक नहीं होता, इसलिए हिदायत फरमाई कि अगर इन मामलात में गवाही के लिए मुकर्ररा मर्द मयस्सर न हों तो एक मर्द के साथ दो औरतों को रखा जाए कि अगर गवाही देने वाली औरत अपनी गवाही भूल जाए तो दूसरी औरत उसे याद दिला दे।

गोया इस में भी गवाही एक औरत की ही है, सिर्फ उसके इन मामलात से अमूमन ताल्लुक न होने की वजह से उसके भूल जाने के इंदेशा के पेश-ए-नज़र एहतियातन दूसरी औरत उसकी मदद के लिए और उसे बात याद कराने के लिए रख दी गई है। कुरान करीम का मंतक़ भी उसी मफ़हूम की ताईद फरमा रहा है। चुनांचे फ़रमाया: या अय्युहल्लज़ीना आमनू इज़ा तदायनतुम बि दैनिन इला अजलिन मुसम्मन ... वस्तशहिदू शहीदैनी मिन रिजालिकुम, फइल लम यकूना रजुलैनी फरजुलुं वमरअतानि मिम्मन तर्दोना मिनश शुहदाए अन तदिल्ल इहदाहुमा फतुज़क्किर इहदाहुमल उखरा। (सूरत-अल-बकरा: 283) अर्थात ए वह लोग जो ईमान लाए हो! जब तुम एक मुअय्यन मुद्दत तक के लिए कर्ज़ का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो... और अपने मर्दों में से दो को गवाह ठहरा लिया करो। और अगर

दो मर्द मयस्सर न हों तो एक मर्द और दो औरतें (ऐसे) गवाहों में से जिन पर तुम राजी हो। (यह) इसलिए (है) कि उन दो औरतों में से अगर एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद करवा दे।

फिर कर्ज़ के लेन-देन के मामलात में भी औरत हो या मर्द, दोनों की गवाही की हैसियत और अहमियत बराबर ही है लेकिन चूंकि माली लेन-देन के मामलात का ताल्लुक अमूमन औरतों से नहीं होता इसलिए गवाही देने वाली औरत की मदद के लिए कि अगर वह उस लेन-देन की तफ्सील भूल जाए तो उसे यह मामला याद करवाने के लिए एक दूसरी औरत को भी साथ रखने की ताकीद फरमा दी ताकि किसी गवाह के भूल जाने से लेन-देन करने वाले फ़िरक़ैन में से किसी की हक़ तलफ़ी न हो सके।

प्रश्न: कादियान से एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहुल अज़ीज़ की खिदमत-ए-अक्दस में लिखा कि मेरी माँ ने वफात से पहले मुझे कहा था कि उनकी वफात के बाद मैं उन्हें ग़ुस्ल दूं। लेकिन मेरी माँ की वफात कोरोना से हुई इसलिए उन्हें ग़ुस्ल नहीं दिया जा सका। जिसकी वजह से मुझे बहुत तकलीफ है। इस बारे में रहनुमाई फ़रमाएं कि क्या मैंने दुरुस्त किया है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने पत्र तिथि 19 सितंबर 2021 में इस सवाल के बारे में दर्ज़ ज़िल रहनुमाई फरमाई। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: असल बात यह है कि आम हालात में औरत की मय्यत को औरतें और मर्द की मय्यत को मर्द ही ग़ुस्ल देते हैं। सिवाय पति-पत्नी के कि वह एक दूसरे की मय्यत को ग़ुस्ल दे सकते हैं।

इसलिए आपने बहुत अच्छा किया कि अपनी माँ की मय्यत को ग़ुस्ल नहीं दिया। और वैसे भी जैसा कि आपने लिखा है कि उनकी वफात कोरोना वायरस की वजह से हुई थी इसलिए तिब्बी तौर पर भी आपको उन्हें ग़ुस्ल देने की इजाज़त नहीं मिलनी थी। इसलिए आपको इस वजह से किसी किस्म की परेशानी में मुब्तिला होने की ज़रूरत नहीं है। अल्लाह तआला आपकी माँ के साथ रहम और मग़फिरत का सुलूक फ़रमाए, उनके दर्जे बुलंद फ़रमाए, आप सब लावाहिकीन को सब्र-ए-जमील अता फ़रमाए और उनकी नेकियों और दुआओं का वारिस बनाए। आमीन।

प्रश्न: जर्मनी से एक दोस्त ने, कर्ज़ का लेन-देन करते वक्त गवाह ठहराने के बारे में सूरत-अल-बकरा की आयत की रोशनी में औरत की गवाही के बारे में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहुल अज़ीज़ से रहनुमाई चाही। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने पत्र तिथि 21 सितंबर 2021 में इस सवाल के बारे में दर्ज़ ज़िल हिदायत फरमाई। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: मुखालिफ़ीन-ए-इस्लाम की तरफ से इस्लामी तालीम पर जो बड़े-बड़े इतराज़ किए जाते हैं, उनमें से एक इतराज़ यह है कि इस्लाम ने मर्द के मुकाबले में औरत की गवाही को आधा रख कर गोया औरत को कमतर क़रार दिया है। लेकिन यह इतराज़ भी दूसरे इतराज़ात की तरह इस्लामी तालीमात की हकीकत और उसकी रूह को न समझने की वजह से बला वजह घड़ा गया है।

हकीकत यह है कि कुरान करीम ने किसी जगह यह नहीं फ़रमाया कि मर्द के मुकाबले में औरत की गवाही निस्फ है। बल्कि अगर कुरान करीम पर गौर किया जाए तो जिन उमूर का औरत से सीधा ताल्लुक है, उनमें जिस तरह मर्द की गवाही को कुबूल किया गया है उसी तरह औरत की गवाही को भी तस्लीम किया गया है। चुनांचे सूरत-अन-नूर में पति-पत्नी के दरमियान लिआन की सूरत में जो गवाही का तरीक़ा बयान किया गया है उसमें औरत और मर्द दोनों की गवाही और कसम में कोई फर्क नहीं रखा गया बल्कि दोनों का बिल्कुल एक ही नतीजा निकाला गया है। चुनांचे अल्लाह तआला फरमाता है: वल्लज़ीना यरमूना अज़्वाजहुम वलम यकुन लहुम शुहदाओ इल्ला अनफुसहुम फशहादतु अहदिहिम अरबा उशहादातिन बिल्लाहि इन्नहू लमिनास सादिकीन। वल्खामिसतु अन्ना लअनतल्लाहि अलैहि इन काना मिनल काजिबीन। वयद्रऊ अनहल अज़ाबा अन तशहदा अरबा शहादातिन बिल्लाहि इन्नहू लमिनल काजिबीन। वल्खामिसता अन्ना ग़ज़बल्लाहि अलैहा इन काना मिनस सादिकीन। (सूरत-अन-नूर: 7 से 10) तर्जुमा: और जो लोग अपनी बीवियों पर इल्ज़ाम लगाते हैं और उनके पास सिवाय अपने वजूद के और कोई गवाह नहीं होता तो उनमें से हर शख्स को ऐसी गवाही देनी चाहिए जो अल्लाह की कसम खा कर चार गवाहियों पर मुशम्मिल हो और (हर गवाही में) वह यह कहे कि वह रास्तबाज़ों में से है। और पांचवीं (गवाही) में (कहे) कि उस पर खुदा की लानत हो, अगर वह झूठों में से हो। और उस बीवी से (जिस पर उसका शौहर इल्ज़ाम लगाए) उसका अल्लाह की कसम खा कर चार गवाहियां देना कि वह (शौहर) झूठा है अज़ाब दूर कर देगा। और पांचवीं (कसम) इस तरह (खाए) कि अल्लाह का ग़ज़ब उस (औरत) पर नाजिल हो अगर वह (इल्ज़ाम लगाने वाला शौहर) सच्चा है।

इसी तरह हदीस में भी आता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सिर्फ एक औरत की गवाही पर कि उसने एक शादीशुदा जोड़े में से लड़के और लड़की दोनों को दूध पिलाया था, उन दोनों के दरमियान अलहिदगी करवा दी। चुनांचे हज़रत उकबा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने अबू ऐहाब बिन अज़ीज़ की लड़की से निकाह किया उसके बाद एक औरत ने आ कर बयान किया कि मैंने उकबा को और उस औरत को जिससे उकबा ने निकाह किया है दूध पिलाया है (फिर यह दोनों रिजाई बहन-भाई हैं, उनमें निकाह दुरुस्त नहीं) उकबा ने कहा कि मैं नहीं जानता कि तूने मुझे दूध पिलाया है और न तूने (इससे) पहले कभी इस बात की इत्तिला दी है। फिर उकबा सवारी पर सवार हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास मदीना गए और आप से (यह मसला) पूछा तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अब जबकि यह बात कह दी गई है तुम किस तरह उसे अपने निकाह में रख सकते हो। फिर उकबा ने उस औरत को छोड़ दिया। और उसने दूसरे शख्स से निकाह कर लिया। (सहीह बुखारी, किताब-उल-इल्म, बाब-अर-रिहला फिल मसअला अन-नाजिला व तअलीमि अहलिही)

जहां तक कर्ज़ के लेन-देन में मर्द और औरत की गवाही का ताल्लुक है तो अमूमन ऐसे मामलात का चूंकि मर्दों से ताल्लुक होता है और औरतों से सीधा ताल्लुक नहीं होता, इसलिए हिदायत फरमाई कि अगर इन मामलात में गवाही के लिए मुकर्ररा मर्द मयस्सर न हों तो एक मर्द के साथ दो औरतों को रखा जाए कि अगर गवाही देने वाली औरत अपनी गवाही भूल जाए तो दूसरी औरत उसे याद दिला दे।

गोया इस में भी गवाही एक औरत की ही है, सिर्फ उसके इन मामलात से अमूमन ताल्लुक न होने की वजह से उसके भूल जाने के इंदेशा के पेश-ए-नज़र एहतियातन दूसरी औरत उसकी मदद के लिए और उसे बात याद कराने के लिए रख दी गई है। कुरान करीम का मंतक़ भी उसी मफ़हूम की ताईद फरमा रहा है। चुनांचे फ़रमाया: या अय्युहल्लज़ीना आमनू इज़ा तदायनतुम बि दैनिन इला अजलिन मुसम्मन ... वस्तशहिदू शहीदैनी मिन रिजालिकुम, फइल लम यकूना रजुलैनी फरजुलुं वमरअतानि मिम्मन तर्दौना मिनश शुहदाए अन तदिल्ल इहदाहुमा फतुज़क्किर इहदाहुमल उखरा। (सूरत-अल-बकरा: 283) अर्थात ए वह लोग जो ईमान लाए हो! जब तुम एक मुअय्यन मुद्दत तक के लिए कर्ज़ का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो... और अपने मर्दों में से दो को गवाह ठहरा लिया करो। और अगर दो मर्द मयस्सर न हों तो एक मर्द और दो औरतें (ऐसे) गवाहों में से जिन पर तुम राजी हो। (यह) इसलिए (है) कि उन दो औरतों में से अगर एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद करवा दे।

फिर कर्ज़ के लेन-देन के मामलात में भी औरत हो या मर्द, दोनों की गवाही की हैसियत और अहमियत बराबर ही है लेकिन चूंकि माली लेन-देन के मामलात का ताल्लुक अमूमन औरतों से नहीं होता इसलिए गवाही देने वाली औरत की मदद के लिए कि अगर वह उस लेन-देन की तफ्सील भूल जाए तो उसे यह मामला याद करवाने के लिए एक दूसरी औरत को भी साथ रखने की ताकीद फरमा दी ताकि किसी गवाह के भूल जाने से लेन-देन करने वाले फ़िरक़ैन में से किसी की हक़ तलफ़ी न हो सके।

प्रश्न: सीरिया के एक दोस्त ने शेयर्स और स्टॉक मार्केट आदि के कारोबार में सूदी तत्वों के पाए जाने और इस बारे में अपनी रिसर्च पेश करने के बारे में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहुल अज़ीज़ की खिदमत में तहरीर किया। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने पत्र तिथि 28 सितंबर 2021 में इस मसले के बारे में दर्ज़ ज़िल हिदायत फरमाई। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: इल्मी तहकीक करना तो बहुत अच्छी बात है, आप ज़रूर इस बारे में तहकीक करके अपनी रिपोर्ट मुझे भिजवाएं। बाकी जहां तक मौजूदा ज़माने में मुख्तलिफ किस्म के कारोबारों में सूदी तत्वों के पाए जाने का ताल्लुक है तो इस बात को समझने के लिए इस ज़माने के हुक्म-ओ-अदल हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम का हस्ब-ए-ज़ैल इर्शाद बुनियादी हैसियत रखता है। हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "अब इस मुल्क में अक्सर मसाइल ज़ैर-ओ-ज़बर हो गए हैं। कल तिजारतों में एक न एक हिस्सा सूद का मौजूद है। इसलिए इस वक्त नए इज्तिहाद की ज़रूरत है।" (अल-बद्र नंबर 41 व 42, भाग 3, तिथि 1 व 8 नवंबर 1904, पृष्ठ 8)

फिर एक जगह सूद की तारीफ बयान करते हुए हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "शरअ में सूद की यह तारीफ है कि एक शख्स अपने फायदे के लिए दूसरे को रुपया कर्ज़ देता है और फायदा मुकर्रर करता है यह तारीफ जहां सादिक आवेगी वह सूद कहलावेगा। लेकिन जिसने रुपया लिया है अगर वह वादा-वईद तो कुछ नहीं करता और अपनी तरफ से ज़्यादा देता है तो वह सूद से बाहर है। चुनांचे अंबिया हमेशा शराइत की रिआयत रखते आए हैं। अगर बादशाह कुछ रुपया लेता है और वह अपनी तरफ से ज़्यादा देता है और देने वाला उस नियत से नहीं देता कि सूद है तो वह भी सूद में दाखिल नहीं है वह बादशाह की तरफ से एहसान है। पैगंबर-ए-खुदा ने किसी से ऐसा कर्ज़ा नहीं लिया कि अदायगी-ए-वक़्त उसे कुछ न कुछ ज़रूर ज़्यादा (न) दिया हो। यह ख्याल रहना चाहिए कि अपनी ख्वाहिश न हो। ख्वाहिश के बर-खिलाफ जो ज़्यादा मिलता है वह सूद में दाखिल नहीं है।" (अल-बद्र नंबर 10, भाग 2, तिथि 27 मार्च 1903, पृष्ठ 75)

फिर इस्लाम ने जिस सूद से मना फ़रमाया है वह यह है कि इंसान किसी को उस नियत

के साथ कर्ज़ दे कि उसे उस कर्ज़ में दी जाने वाली रकम पर ज़ाएद रकम मिले। लेकिन अगर कर्ज़ लेने वाला अपनी तरफ से कुछ ज़ाएद दे तो वह सूद में शामिल नहीं है।

इलावा ज़ीन मौजूदा ज़माने में बैंकिंग सिस्टम तकरीबन हर दुनियावी कारोबार का लाजिमी जज़ू है और दुनिया के अक्सर बैंकों के निजाम में किसी न किसी तरह सूद का तत्व मौजूद होता है, जो इन कारोबारों का भी हिस्सा बनता है। इसी लिए हज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि कल तिजारतों में एक न एक हिस्सा सूद का मौजूद है। इसलिए इस वक्त नए इज्तिहाद की ज़रूरत है।

इन हालात में अगर इंसान बहुत ज़्यादा वहम में पड़ा रहे तो उसका जिंदगी गुज़ारना ही दुभर हो जाएगा। क्योंकि आम जिंदगी में जो लिबास हम पहनते हैं, उन कपड़ों का कारोबार करने वाली कंपनियों में भी कहीं न कहीं सूदी पैसा लगा होगा। जो ब्रेड हम खाते हैं, उसके कारोबार में भी कहीं न कहीं सूदी पैसे की आमीज़िश होगी। अगर इंसान इन सब दुनियावी ज़रूरतों को छोड़-छाड़ कर अपने घर में ही बैठना चाहे जो बाज़ाहिर नामुमकिन है फिर भी वह मकान जिस ईंट, रेत और सीमेंट से बना है, उन चीज़ों को बनाने वाली कंपनियों के कारोबार में भी कहीं न कहीं सूदी कारोबार या सूद के पैसे की मिलावट होगी।

फिर बहुत ज़्यादा मीन-मेख निकाल कर और वहम में पड़ कर अपने लिए बला वजह मुश्किलात पैदा नहीं करनी चाहिए। हदीस में भी आता है, हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं। अन्ना कौमन कालू या रसूलल्लाह इन्ना कौमन यअतूना बिल्लहमि ला नदरी अज़करुस्मल्लाहि अलैहि अम ला फक़ाला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सम्मुल्लाहा अलैहि व कुलूहु। (सहीह बुखारी, किताब-उल-बयू) अर्थात कुछ लोगों ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह एक जमात हमारे पास गोश्त ले कर आती है, हम नहीं जानते कि उन्होंने (उसे ज़ब्ह करते वक्त) उस पर अल्लाह का नाम लिया होता है या नहीं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम उस गोश्त पर अल्लाह का नाम (बिस्मिल्लाह) पढ़ लिया करो और उसे खा लिया करो।

हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम की खिदमत में अर्ज़ किया गया कि क्या हिंदुओं के हाथ का खाना दुरुस्त है? फ़रमाया: "शरीअत ने उसको मुबाह रखा है। ऐसी पाबंदियों पर शरीअत ने ज़ोर नहीं दिया बल्कि शरीअत ने तो कद अफलहा मन जक्काहा पर ज़ोर दिया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आर्मेनियों के हाथ की बनी हुई चीज़ें खा लेते थे और बग़ैर इस के गुज़ारा भी तो नहीं होता।" (अल-हकम नंबर 19, भाग 8, तिथि 10 जून 1904, पृष्ठ 3)

इसी तरह हज़रत मुंशी मुहम्मद हुसैन साहिब कलर्क दफ्तर सरकारी वकील लाहौर के नाम अपने एक पत्र तिथि 25 नवंबर 1903 में हज़ूर अलैहिस्सलाम ने तहरीर फ़रमाया: "आप अपने घर में समझा दें कि इस तरह शक-ओ-शुबह में पड़ना बहुत मना है। शैतान का काम है, जो ऐसे वसवसे डालता है। हरगिज़ वसवसे में नहीं पड़ना चाहिए। गुनाह है और याद रहे कि शक के साथ गुस्ल वाजिब नहीं होता। और न सिर्फ शक से कोई चीज़ पलीद हो सकती है। ऐसी हालत में बेशक नमाज़ पढ़नी चाहिए। और मैं इंशाअल्लाह दुआ भी करूंगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप के अस्हाब वहमियों की तरह हर वक्त कपड़ा साफ नहीं करते थे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि अगर कपड़े पर मनी गिरती थी तो हम उस मनी खुश्कशुदा को सिर्फ झाड़ देते थे। कपड़ा नहीं धोते थे। और ऐसे कुएं से पानी पीते थे जिस में हैज़ के लत्ते पड़ते थे। ज़ाहिरी पाकीज़गी से मामूली हालत पर किफायत करते थे। ईसाइयों के हाथ का पनीर खा लेते थे हालांकि मशहूर था कि सूअर की चर्बी उसमें पड़ती है। उसूल यह था कि जब तक यक़ीन न हो हर यक चीज़ पाक है। महज़ शक से कोई चीज़ पलीद नहीं होती।"

(अखबार-उल-फज़ल कादियान दारुल अमान नंबर 66, भाग 11, तिथि 22 फरवरी 1924, पृष्ठ 9)

फिर इंसान को वहमों और शक-ओ-शुबह में मुब्तिला हुए बग़ैर तकवा से काम लेते हुए अपने मामलात और दुनियावी उमूर को बजा लाने की कोशिश करनी चाहिए और जहां सीधा किसी ममनूआ काम में पड़ने का इमकान हो या किसी चीज़ की हुरमत वाजेह तौर पर नज़र आती हो उस से बहर-हाल इज्तिनाब करना चाहिए। चुनांचे इस बारे में हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक और हदीस हमारी बेहतरीन रहनुमाई करती है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं: मा खुय्यिरन नबिय्यु सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बैना अमरैन इल्लाखतारा ऐसरहुमा मा लम यअसम फइज़ा कानल इसमु काना अबअदहुमा मिनहु वल्लाहि मान्तक़मा लिनफसिही फी शैयिन युता इलैहि क़त्तु हत्ता तुन्तहका हुरुमातुल्लाहि फयन्तकिमु लिल्लाह। (सहीह बुखारी, किताब-उल-हुदूद) अर्थात नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जब भी दो चीज़ों के दरमियान इख्तियार दिया गया तो आप ने उन में से आसान सूरत को इख्तियार किया जब तक कि वह गुनाह की बात न हो। अगर वह गुनाह की बात होती तो आप उस से बहुत ज़्यादा दूर रहते। अल्लाह की कसम आप ने कभी अपने लिए किसी से इंतिकाम नहीं लिया, जब तक मुहर्रमात-ए-इलाहिया की खिलाफ-वर्जी न हो और जब उस की खिलाफ-वर्जी की हो तो आप अल्लाह के लिए इंतिकाम लेते।

इसी तरह हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम के बारे में भी आता है कि एक मौक़े पर अमरीका और यूरोप की हैरत-अंगेज़ इजादात का ज़िक्र हुआ। इसी में यह ज़िक्र भी आया कि दूध और शोरबा आदि जो कि टीनों में बंद हो कर विलायत से आता है बहुत ही नफीस और सुथरा होता है और एक खूबी उन में यह होती है कि उन को बिल्कुल हाथ से नहीं छुआ जाता। दूध तक भी बाज़रीया मशीन दुहा जाता है। इस पर हज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "चूंकि नसारा उस वक्त एक ऐसी कौम हो गई है जिस ने दीन की हुदूद और उसके हलाल-ओ-हराम की कोई परवा नहीं रखी और कसरत से सूअर का गोश्त उन में इस्तेमाल होता है और जो ज़ब्ह करते हैं उस पर भी खुदा का नाम हरगिज़ नहीं लेते बल्कि झटके की तरह जानवरों के सर जैसा कि सुनाए गए हैं अलहिदा कर दिए जाते हैं। इसलिए शुबह पड़ सकता है कि बिस्किट और दूध आदि जो उन के कारखानों के बने हुए हों उन में सूअर की चर्बी और सूअर के दूध की आमीज़िश हो। इसलिए हमारे नज़दीक विलायती बिस्किट और इस किस्म के दूध और शोरबे आदि इस्तेमाल करना बिल्कुल खिलाफ-ए-तकवा और नाजाइज़ हैं। जिस हालत में कि सूअर के पालने और खाने का आम रिवाज उन लोगों में विलायत में है तो हम कैसे समझ सकते हैं कि दूसरी अशयाए-ए-खुरदनी जो कि यह लोग तैयार करके इरसाल करते हैं उन में कोई न कोई हिस्सा उसका न होता हो।"

इस पर अबू सईद साहिब मअरूफ अरब साहिब ताजिर-ए-बिरिंज रंगून ने एक वाक़िया हज़रत अकदस की खिदमत में यूं अर्ज़ किया कि रंगून में बिस्किट और डबल रोटी बनाने का एक कारखाना अंग्रेजों का था। वह एक मुसलमान ताजिर ने करीब डेढ़ लाख रुपए के खरीद लिया। जब उस ने हिसाब-ओ-किताब की किताबों को परताल कर के देखा तो मालूम हुआ कि सूअर की चर्बी भी उस कारखाने में खरीदी जाती रही है। दरयाफ्त पर कारखाना वालों ने बताया कि हम उसे बिस्किट आदि में इस्तेमाल करते हैं क्योंकि उस के बग़ैर यह चीज़ें लज़ीज़ नहीं होतीं और विलायत में भी यह चर्बी इन चीज़ों में डाली जाती है।

इस वाक़िए के सुनने से नाज़िरीन को मालूम हो सकता है कि हज़रत अकदस मसीह मौउद अलैहिस्सलाम का ख्याल किस कदर तकवा और बारीक-बीनी पर था। लेकिन चूंकि हम में से कुछ ऐसे भी थे जिन को अक्सर सफ़र का इत्तिफाक़ हुआ है और कुछ भाई अफ्रीका आदि दूर-दराज़ अम्सार-ओ-बिलाद में इब्तिदा मौजूद हैं जिन को इस किस्म के दूध और बिस्किट आदि की ज़रूरत पेश आ सकती है इसलिए उन को भी मद-ए-नज़र रख कर दोबारा इस मसले की निस्बत दरयाफ्त किया गया। और अलावा इस के अहल-ए-हुनूद के खाने की निस्बत अर्ज़ किया गया कि यह लोग भी अशयाए को बहुत गलीज़ रखते हैं और उन की कड़ाहियों को अक्सर कुत्ते चाट जाते हैं। इस पर हज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "हमारे नज़दीक नसारा का वह तआम हलाल है जिस में शुबह न हो और अज़-रूए कुरान मजीद के वह हराम न हो। वरना उस के यही मअनी होंगे कि कुछ अशयाए को हराम जान कर घर में तो न खाया मगर बाहर नसारा के हाथ से खा लिया और नसारा पर ही क्या मुन्हसिर है अगर एक मुसलमान भी मशकूक-उल-हाल हो तो उस का खाना भी नहीं खा सकते मिसालन एक मुसलमान दीवाना है और उसे हराम-ओ-हलाल की खबर नहीं है तो ऐसी सूरत में उस के तआम या तैयार की हुई चीज़ों पर क्या एतिबार हो सकता है। इसी लिए हम घर में विलायती बिस्किट इस्तेमाल नहीं करने देते बल्कि हिंदुस्तान की हिंदू कंपनी के मंगवाया करते हैं।"

ईसाइयों की निस्बत हिंदुओं की हालत इज्तिरारी है क्योंकि यह कसरत से हम लोगों में मिल-जुल गए हैं और हर जगह उन्हीं की दुकानें होती हैं। अगर मुसलमानों की दुकानें मौजूद हों और हर शये वहां ही से मिल जाए तो फिर अलबत्ता उन से खुरदनी अशयाए न खरीदनी चाहिए। (अल-बद्र नंबर 27, भाग 3, तिथि 16 जुलाई 1904, पृष्ठ 3)

फिर खुलासा-ए-कलाम यह कि इंसान को न तो बहुत ज़्यादा वहमों में पड़ कर जाइज़ अशयाए के इस्तेमाल से बला वजह किनारा कशी करने की ज़रूरत है और न ही गैर-मुहतात अंदाज इख्तियार कर के हर जाइज़-ओ-नाजाइज़ चीज़ को इस्तेमाल करने की कोशिश करनी चाहिए बल्कि एक उचित और सीमित हद तक मामलात की तहकीक कर के इस्लामी तालीमात के मुताबिक जिंदगी गुज़ारने की कोशिश करनी चाहिए।

प्रश्न: यूके से एक महिला ने बच्चों को गोद लेने तथा इन बच्चों और उनके अन्य रिश्तेदारों के अधिकारों एवं कर्तव्यों के बारे में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मार्गदर्शन चाहा है। जिस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 26 सितंबर 2021 में इसका निम्नलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाया। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

उत्तर: इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार बच्चों को गोद लेने की अनुमति तो है लेकिन इस बारे में अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में विशेष रूप से यह आदेश भी दिया है कि ऐसे बच्चों को उनके वास्तविक माता-पिता के नामों के साथ ही याद किया जाए। (सूरत अल-अहज़ाब: 5, 6) इसलिए ऐसे बच्चों को छोटी उम्र में ही उनके गोद लिए जाने के बारे में और उनके वास्तविक माता-पिता के विषय में बता देना चाहिए। यही सही इस्लामी शिक्षा है।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 02 October 2025 Issue No. 40

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

जहाँ तक ऐसे बच्चों के विरासत आदि में शरीयत के अधिकार का संबंध है, तो वह उनके वास्तविक माता-पिता के साथ ही स्थापित रहता है। अर्थात् ये बच्चे अपने वास्तविक माता-पिता के और ये बच्चे अपने वास्तविक माता-पिता के शरीयत के वारिस होते हैं। गोद लेने के कारण इन बच्चों और उनके वास्तविक माता-पिता के आपसी विरासती अधिकारों पर कोई फर्क नहीं पड़ता। हालाँकि, ऐसे बच्चों को गोद लेने और उनकी परवरिश करने वाले माता-पिता भी यदि कुछ इन बच्चों को देना चाहें तो अपने जीवनकाल में हिबा (उपहार) के ज़रिए और जीवन के बाद वसीयत के रूप में उन्हें दे सकते हैं। लेकिन वसीयत इंसान अपनी कुल संपत्ति के अधिकतम एक तिहाई हिस्से तक ही कर सकता है।

(सहीह बुखारी, किताब अल-वसाया)

प्रश्न: कादियान से एक मित्र ने दूध बैंक का ज़िक्र करते हुए, जहाँ से यतीम बच्चों के लिए माँ का दूध उपलब्ध कराया जाता है, हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखा है कि इस तरह तो वहाँ का दूध पीने वाले बच्चे आपस में रिज़ाई (दूध पिलाने से संबंधित) भाई-बहन बन जाते होंगे, लेकिन यह पता नहीं चल सकता कि किसका रिज़ाई भाई या बहन कौन है। क्या इस्लाम में इस तरह के दूध बैंक स्थापित करने की अनुमति है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 12 अक्टूबर 2021 में इस प्रश्न के बारे में निम्नलिखित मार्गदर्शन फ़रमाया। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

उत्तर: इस्लामी शिक्षा के अनुसार एक माँ का दूध पीने वाले बच्चों का आपस में रिज़ाअत (दूध संबंध) का रिश्ता स्थापित हो जाता है, जिसके कारण ऐसे बच्चों और बच्चियों की आपस में शादी नहीं हो सकती जिन्होंने एक ही माँ का दूध पिया हो। इसलिए यदि किसी जगह आवश्यकता के मद्देनज़र यतीम बच्चों को माँ के दूध की सुविधा उपलब्ध कराई जाए तो इसका प्रबंध करने वाले संस्थान या सरकार को बहुत अधिक सावधानी बरतनी पड़ेगी और उसके लिए यह ज़रूरी होगा कि वह इस बात का भी रिकॉर्ड रखे कि किस बच्चे को किस महिला का दूध पिलाया गया है। जो प्रत्यक्ष रूप से असंभव होगा।

इसलिए मेरे विचार में तो शरीयत इस्लामिया के अनुसार इस तरह के दूध बैंक का संचालन सही नहीं है क्योंकि इससे कई प्रकार के भ्रम और समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। और वैसे भी इस ज़माने में इस तरह के दूध बैंक की आवश्यकता ही क्या है जबकि बाज़ार में दर्जनों प्रकार का फॉर्मूला दूध उपलब्ध है। यदि किसी संस्थान या सरकार को यतीम बच्चों की परवरिश का इतना ही एहसास है तो वह ऐसे बच्चों के लिए इस फॉर्मूला दूध की सुविधा उपलब्ध करा सकते हैं।

बहरहाल, मैं इस बारे में और शोध करवा रहा हूँ लेकिन फिलहाल तो मेरा यही विचार है कि आपके पत्र में वर्णित दूध बैंक के संचालन का तरीका इस्लामी शिक्षा के अनुसार सही नहीं है।

बाद में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस मसले पर दारुल इफ्ता रबवाह के ज़रिए शोध करवाकर अपने पत्र दिनांक 17 अगस्त 2022 में प्रश्न करने वाले मित्र को अग्रलिखित हिदायत से भी नवाज़ा। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

मैंने इस मामले पर दारुल इफ्ता रबवाह के ज़रिए शोध करवाई है। इस शोध के अनुसार इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार महिलाओं के दूध का दूध बैंक स्थापित करना और इसके ज़रिए बच्चों को दूध उपलब्ध कराना सही नहीं है, क्योंकि इस्लाम ने रिज़ाअत (दूध पिलाने) के आधार पर स्थापित होने वाले रिश्तों का इतना सम्मान स्थापित फ़रमाया है कि इन रिश्तों की आपस में शादी की उसी तरह मनाही फरमाई है, जिस तरह नस्ब (रक्त संबंध) के आधार पर महरम रिश्तों की आपस में शादी की मनाही फरमाई है। जबकि इस प्रकार के दूध बैंक से मिलने वाले दूध के बारे में कुछ पता नहीं चलता कि एक दूध के पैकेट में कितने और किन-किन महिलाओं का दूध है। और यदि उन महिलाओं की इस पैकेट पर जानकारी अंकित भी कर दी जाए, तो इस दूध को पीने वाले बच्चों के अनगिनत रिज़ाई भाई-बहन बन जाएँगे, जिनका हिसाब रखना और उनसे शादी के मामले में सावधानी बरतना प्रत्यक्ष रूप से असंभव हो जाएगा।

इसलिए यदि किसी बच्चे को माँ के दूध की आवश्यकता हो तो उसके लिए जिस तरह इस्लाम ने रिज़ाई माँ के तरीके को जारी फ़रमाया है, उसी तरीके को अपनाना चाहिए। लेकिन यदि किसी जगह इसकी सुविधा उपलब्ध न हो तो फिर महिलाओं के दूध के दूध बैंक से मिलने वाले दूध के उपयोग का तकल्लुफ (झंझट) करके रिश्तों को संदेहास्पद बनाने की बजाय आम गाय, भैंस या कृत्रिम दूध के पैकेटों के दूध का उपयोग करना चाहिए। ताकि इस्लाम ने जिन रिश्तों का सम्मान स्थापित फ़रमाया है, उसकी पूरी तरह पाबंदी हो सके।

प्रश्न: यूके से एक महिला ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखा कि हम इशा की नमाज़ में वित्र की आखिरी रकात अलग पढ़ते हैं, इसकी क्या वजह है? साथ ही यह कि जब हम छुट्टियों पर जाते हैं और अपार्टमेंट बुक करते हैं तो क्या हम वहाँ के फ्राइंग पैन आदि का उपयोग कर सकते हैं? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 12 अक्टूबर 2021 में इस मसले के बारे में निम्नलिखित हिदायत फरमाईं। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

उत्तर: उलेमाए हदीस व फिक़्ह ने वित्र पढ़ने के कई तरीके बयान किए हैं और उन्होंने अपने-अपने मत के हक में विभिन्न दलीलें भी दी हैं। इनमें अधिक मशहूर दो तरीके हैं: एक यह कि दो रकअत पढ़ कर सलाम फेर दिया जाए और फिर तीसरी रकअत अलग पढ़ी जाए। और दूसरा तरीका यह है कि तीनों रकअतें एक ही सलाम के साथ एक साथ पढ़ी जाएँ और बीच में दो रकअतों के बाद तशहहुद बैठा जाए। चुनाँचे एक व्यक्ति के प्रश्न पर कि वित्र किस तरह पढ़ने चाहिए? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "चाहे दो रकअत पढ़ कर सलाम फेर कर तीसरी रकअत पढ़ लो, चाहे तीनों एक ही सलाम से बीच में अत-तहिय्यात बैठ कर पढ़ लो।"

(अल-हकम अंक 13, जिल्द 7, दिनांक 10 अप्रैल 1903, पृष्ठ 14)

हदीसों में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमआम तौर पर वित्र की तीन रकअतों के बीच सलाम के साथ फ़ासला किया करते थे। चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है: "काना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यफ्सिलु बैनल वित्रि वश्शफ्अि बितस्लीमतिन व युस्मिउनाहा।" (मुसनद अहमद बिन हंबल, मुसनद अब्दुल्लाह बिन उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु, हदीस संख्या 5204) अर्थात् रसूलुल्लाहसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वित्र और उससे पहले की दो रकअतों के बीच सलाम के साथ फ़ासला कर लिया करते थे और यह सलाम हमें सुनाया करते थे।

इसी तरह हज़रत आयशा रदियल्लाहु अन्हा से मरवी है: "काना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम युसल्ली फिल हुजरति व अना फिल बैति फयफ्सिलु बैनश्शफ्अि वल वित्रि बितस्लीमिन युस्मिउनाह।" (मुसनद अहमद बिन हंबल, हदीस अस-सैयिदा आयशा रदियल्लाहु अन्हा, हदीस संख्या 23398) अर्थात् रसूलुल्लाहसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हुजरे (कमरे) में नमाज़ पढ़ते थे और मैं घर में होती, आप वित्र और पहली दो रकअतों में सलाम के साथ फ़ासला करते थे और अपना सलाम हमें सुनाते थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वित्र पढ़ने के विषय में हज़रत मुस्लिह मौऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु की सेवा में अर्ज़ किया गया कि हज़रत साहिब वित्र दो पढ़ कर सलाम फेरते थे या तीन पढ़ कर? इस पर हज़रत मुस्लिह मौऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया: "आम तौर पर दो पढ़ कर। मौलवी सैय्यद सरवर शाह साहिब ने कहा। जितना वाक़िफ लोगों से और रिवायतें सुनी हैं, उनसे भी यही मालूम होता है कि दो पढ़ कर सलाम फेरते थे फिर एक पढ़ते।"

(अल-फ़ज़ल कादियान दारुल अमान अंक 97, जिल्द 9, दिनांक 12 जून 1922, पृष्ठ 7)

अतः यद्यपि फुकहा ने तीनों वित्र एक साथ एक ही सलाम के साथ बीच में तशहहुद बैठ कर पढ़ने के तरीके को भी सही और मसनून क़रार दिया है, लेकिन हमारे आका व मुता आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके ग़ुलामे सादिक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आम सुन्नत यही थी कि आप वित्र की दो रकअतें पढ़ने के बाद सलाम फेर कर फिर तीसरी रकअत अलग पढ़ा करते थे।

बाकी जहाँ तक छुट्टियों के दौरान किराए के अपार्टमेंट के बर्तनों के उपयोग का संबंध है, तो उन बर्तनों को अच्छी तरह धोकर उपयोग कर सकते हैं। इसमें कोई हरज की बात नहीं है।

शेष ..

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad